सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 25/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

सितम्बर, 2017 वर्ष 16 अंक 07

ईदे क़ुर्बां आई है

ईदे क़ुर्बां आई है, ख़बर खुशी की लाई है
ईद मुबारक कहो तुम उससे, जो भी अपना भाई है
ईद गाह में पढ़ो नमाज़, खुत्बा वां पर सुनो ज़रूर..
रब ने वुसअत दी है अगर तो कुरबानी तुम करो जरूर
बाज़ जानवर हक़ में हमारे, सबज़ी और नबात हैं
फ़ज़्ल से हमको अता की, रब ने यह सौगात हैं
ग़िज़ा किसी की गोश्त फक़त है, यह उसकी मजबूरी है
गोश्त न खाये तो मर जाये, शेर की यह मजबूरी है
रब ने हमको दी है इजाज़त, हलाल गोश्त हम खाते हैं
हराम राह से मिले जो चावल, नही हम उसको खाते हैं
खाओ और खिलाओ दिल से, नेकी खूब कमाओ तुम
करो ग़रीबों की तुम ख़िदमत, रब की रिज़ा ता पाओ तुम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
बलिदान की अनुपम कहानी	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
मेरे जीवन का ऐतिहासिक दिन	हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0	13
पवित्र कुर्आन की मौलिक शिक्षाएं	हज़रत मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी	18
मसाजिद और हमारे फराइज़	अबू ओमामा	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	27
इस्लाम में उदारता एवं	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	30
तेरी बरबादियों के मशवरे	मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी	34
कुर्बानी के मसाइल	राशिदा नूरी	38
काली मिर्च	उबैदुल्लाह	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद–

फिर उन में कुछ लोग उन पर ईमान लाए और कुछ उनके विरुद्ध हठधर्मी पर डटे रहे और दोज़ख़ जलाने के लिए काफ़ी है(55) बेशक जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया आगे हम उनको आग में डालेंगे, जब–जब उनकी खालें गल जाएंगी तो हम दूसरी खालों से उन को बदल देंगे ताकि[1] वे अजाब चखते रहें, बेशक अल्लाह जबर्दस्त है, हिकमत वाला है(56) और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनको हम ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वे हमेशा उसी में रहेंगे, उन (बाग़ों) में उनके लिए पवित्र पत्नियां होंगी और हम उन को घनी छाओं में प्रवेश कराएंगे(57) तुम्हारे लिए अल्लाह का आदेश यह है कि अमानतों (धरोहरों) को अमानत वालों तक पहुंचा दो और जब लोगों के बीच फैसला करो तो न्याय के साथ फैसला करो, अल्लाह तुम को निहायत अच्छी नसीहत करता है, बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला खूब निगाह रखने वाला है[2](58) ऐ ईमान वालो! अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानों और उनका जो तुम में ज़िम्मेदार हैं, फिर अगर किसी चीज़ में तुम झगड़ पड़ो तो उसको अल्लाह और रसूल की ओर फेर दिया करो अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, यही बेहतर और परिणाम के लिहाज़ से ज़ियादा अच्छा है(59) क्या आपने उनको नहीं देखा जिनका दावा यह है कि वे आप पर उतारी गई (किताब) पर और जो कुछ आप से पहले उतारा जा चुका उस पर ईमान रखते हैं लेकिन वह अपना मुकद्दमा तागूत (शैतान) के पास ले जाना चाहते हैं जब कि उनको इस का आदेश हुआ था कि वे उसका इनकार करें और शैतान यह चाहता है कि उन को बहका कर दूर जा फेंके[3](60) और जब उन से क़हा गया कि अल्लाह की उतारी हुई किताब की ओर और पैग़म्बर की ओर आ जाओ तो आप मुनाफ़िकों को देखेंगे कि वे आपकी ओर आने में अटक कर रह जाते हैं(61) फिर उनका क्या हाल बनता है जब वे अपनी करतूतों के फलस्वरूप मुसीबत में पड़ते हैं तो आपके पास क़समें खाते हुए आते हैं कि हमने तो केवल भलाई करने और जोड़ पैदा करने का इरादा किया था(62) यह वही लोग हैं कि अल्लाह उनके दिलों के हाल से खूब अवगत है तो आप उनसे मुंह मोड़ लिया कीजिए और उनको नसीहत

कीजिए और उनसे उनके हक़ में दिल को लगती हुई कोई बात कह दीजिए(63) और हमने तो पैग़म्बर इस लिए भेजा ताकि अल्लाह के आदेश से उसकी बात मानी जाए और उन लोगों ने जिस समय अपना बुरा किया था वे अगर आपके पास आ जाते और अल्लाह से माफ़ी मांगते और पैगम्बर भी उनके लिए माफी की दुआ करते तो वे अल्लाह को बहुत ज़ियादा तौबा क़ुबूल करने वाला बहुत ही दयालु पाते(64) बस नहीं आपके पालनहार की क़सम वे उस समय तक ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वे अपने झगड़ों में आपको फ़ैसला करने वाला न बना लें फिर आपके फ़ैसले पर अपने मन में कोई तंगी महसूस न करें और पूरी तरह नत्मस्तक हो जाएं[4](65) और अगर हम उन पर यह ज़रूरी ही करार दे देते कि अपनी जानों को तबाही में डाल दो या अपने वतन से निकल जाओ तो उनमें बहुत ही कम लोग इस पर अमल करते और अगर वे उस पर अमल कर लें जिस चीज़ की नसीहत उनको की जा रही है तो उनके लिए बेहतर हो और ज़ियादा साबित क़दमी (दृढ़ता) का कारण हो(66) तब हम उनको अवश्य अपने पास से बड़े बदले से सम्मानित करें(67) और ज़रूर उनको सीधी राह चला दें[5](68)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. अल्लाह तआला ने शरीर की खाल में ऐसे Cells और छोटे मोटे मुसामात (छिद्र) रखे हैं जिनके माध्यम से तकलीफ़ का एहसास दिमाग़ तक पहुंचता है जब खाल जलने से यह Cells नहीं रह जाते तब तकलीफ़ का एहसास भी उसी हिसाब से कम या ख़त्म हो जाता है, आयत में इस ओर इशारा है कि दोज़ख की आग से जब खाल गल जाएगी और तकलीफ़ का एहसास कम होने लगेगा तो अल्लाह तआला तुरन्त ही नई खाल चढ़ा देंगे कि लगातार सख़्त तकलीफ़ होती रहे।

2. मक्का विजय के दिन उस्मान पुत्र तल्हा से चाबी ले कर काबे को खोला गया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भीतर गए, वापसी पर उस्मान पुत्र तलहा ने जो उस समय तक मुश्रिक थे चाबी मांगी, उस पर यह आयत उतरी और चाबी उन को वापस कर दी गई।

3. बहुत से छिपे हुए मुनाफिक़ों ने यह कार्य प्रणाली अपनाई थी कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आने के बजाए यहूदियों से जा कर फ़ैसला कराते ताकि दे दिला कर फ़ैसला अपने पक्ष में करा लें और कुछ दुनिया हासिल हो जाए, अल्लाह तआला स्पष्ट रूप से कहता है कि यह ईमान के विरुद्ध है और शैतान इस काम में लगा रहता है, और अगर वे फैसला अल्लाह के पैग़म्बर से कराए तो दीन व दुन्या के लिए बेहतर है, ईमान वालों को आदेश है कि वे हमेशा सत्य के मुताबिक़ फैसला करें, यहूदियों का रास्ता न अपनाएं।

4. यह मुनाफ़िकों का उल्लेख है उनका काम ही न

शेष पृष्ठ....29 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

दुख देने और सजा देने की मुमानियतः-

हज़रत हिशाम बिन हकीम बिन हिजाम रज़ि0 से रिवायत है कि वह मुल्के शाम गये और उन्होंने निबतियों (एक कबीले का नाम) के कुछ लोगों को देखा जो धूप में खड़े किये गये थे और उनके सरों पर तेल गरम करके डाला गया था, उन्होंने पूछा यह क्या है? लोगों ने कहा मालगुज़ारी न देने की वजह से उनके साथ यह व्यवहार किया जा रहा है।

एक और रिवायत में है कि टेक्स न देने की वजह से यह तकलीफ दी जा रही है। हज़रत हिशाम रज़ि0 ने कहा मैं गवाही देता हूं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे अल्लाह तआला उन लोगों को अज़ाब देगा जो दुन्या में लोगों को अजाब देते हैं, फिर हज़रत हिशाम रज़ि0 अमीर के पास गये और उनको यह हदीस सुनाई तो अमीर ने उन को छोड़ने का हुक्म दिया। (मुस्लिम)

जानवरों के बारे में एहतियातः-

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक गधे को देखा जिस का चहेरा दागा गया था, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात ना पसंद हुई, मैंने कहा कसम खुदा की मैं चेहरा कभी न दागूं गा, फिर मैंने गधे के कूल्हे पर दागने का हुक्म दिया, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि पहले शख्स हैं जिन्होंने कूल्हे पर दागा (मुस्लिम)।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक गधा गुजरा, जिसका चेहरा दागा हुआ था, आपने फरमाया अल्लाह उस पर लानत करे जो चेहरा दागते हैं। (मुस्लिम)

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चेहरे पर मारने से और चेहरा दागने से मना फरमाया है। (मुस्लिम)

जानदार को आग में जलाने की हुरमतः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक लशकर में भेजा और फरमाया कुरैश के दो फुलां फुलां शख्स अगर तुम को मिल जायें तो उनको जला देना जब हम ने चलने का इरादा किया तो आप ने फरमाया मैंने तुम को दो लोगों के जलाने का हुक्म दिया था लेकिन अब कहता हूं कि आग से तो अल्लाह ही अजाब देता है तुम उनको क़त्ल कर देना जलाना नहीं।

(बुखारी)

शेष पृष्ठ....17 पर

बलिदान की अनुपम कहानी

(कुरबानी की बेमिसाल कहानी)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस सच्ची कहानी का संकेत नीचे लिखी पवित्र कुर्आन की आयतों के अनुवाद में मिलता है। अनुवादः इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा "मैं अपने रब की ओर जा रहा हूं, वह मुझे रास्ता दिखाएगा, (फिर कहा) ऐ मेरे रब! मुझे कोई नेक संतान प्रदान कर, (रब ने कहा) तो हम ने उसे एक सहनशील पुत्र की शुभ सूचना दी, फिर जब वह उस के साथ दौड़–धूप करने की अवस्था को पहुंचा (इन का नाम इस्माईल अलैहिस्सलाम है कुछ आलिमों की तहक़ीक़ है कि वह 12,14 वर्ष के हो गए) तो एक दिन इब्राहीम अलै0 ने उन से कहा ऐ मेरे प्रिय बेटे! मैं स्वप्न में देखता हूं कि तुझे कुरबान कर रहा हूं। (कुरबान कर दिया नहीं देखा, कर रहा हूं देखा, तो बेटे से पूछा) तू अब देख तेरा क्या विचार है? बेटे ने कहा "ऐ मेरे बाप! जो कुछ आप को आदेश दिया जा रहा है उसे कर डालिए। अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान (साबिर) पाएंगे। अन्ततः जब दोनों ने अपने आप को (अल्लाह के आगे) झुका दिया और उस ने (इब्राहीम ने, इस्माईल को) उसे कनपटी के बल लिटा दिया (और छुरी चलाने लगे, तो उस समय क्या दृश्य रहा होगा, सोचो! फिर रब ने कहा) और हम ने उसे पुकारा ऐ इब्राहीम! तूने स्वप्न को सच कर दिखाया। निःसंदेह हम उत्तम कारों (नेकों) को इसी प्रकार बदला देते हैं, निःसंदेह यह तो एक खुली हुई परीक्षा थी, और हमने उसे (इस्माईल को) एक बड़ी कुरबानी के बदले में छुड़ा लिया, (अल्लाह तआला ने जन्नत से एक दुंबा भेजा और उस को इस्माईल की जगह पर लिटा दिया गया। वह जब्ह हुआ इस तरह अल्लाह ने इस्माईल को बचा लिया। आगे फरमाया "और हमने पीछे आने वाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि सलाम है इब्राहीम पर, (अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में यह ज़िक्र इस तरह है कि इस उम्मत के मालदारों पर साल में एक बार कुछ खास दिनों में जानवर की कुरबानी का हुक्म दिया गया) उत्तम कारों (नेकूकारों) को हम ऐसा ही बदला देते हैं। निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से था, और हमने उसे दूसरे बेटे इस्हाक़ की शुभ सूचना दी, वह अच्छों में से एक नबी हुए, और हम ने उन में और उनके बेटे इस्हाक़ में बरकत दी, और उन दोनों की नस्ल में कोई तो उत्तमकार है और कोई अपने आप पर खुला जुल्म करने वाला है"।

(अस्साफ़्फ़ातः 99–113)

क्या सच्ची और अनुपम कहानी अल्लाह के प्रिय नबी इब्राहीम अलै0 और उनके नबी जैसे इस्माईल अलै0 से

संबन्धित है। अल्लाह ने अपने बन्दों का मार्गदर्शन करने को हर काल में और विश्व के हर क्षेत्र में अपने नबी या रसूल भेजे, नबी और रसूल को हम हिन्दी में दूत और संदेष्टा कहते हैं। भारत में भी नबी आए होंगे हो सकता है भारत के धार्मिक इतिहास में जो राम और कृष्ण के नाम आते हैं वह नबी रहे हों जिन को उनके मानने वालों ने गलती से अवतार कह डाला लेकिन हम यकीनी तौर पर नबी उसी को कह सकते हैं जिस का नाम पवित्र कुर्आन या हदीस में आया हो, एक भारत क्या, यूरोप नार्थ अमरीका, साउथ अमरीका, कनाडा, ब्राजील, चीन, जापान, साउथ अफ्रीका और आस्ट्रेलिया आदि में भी तो नबी आए होंगे, हम तो सब नबियों को मानते हैं किसी को नकारते नहीं हैं लेकिन अब हम को आदेश है कि नजात (मोक्ष) के लिए केवल अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुकरण करें।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अब से लगभग पाँच हजार वर्ष पहले ईराक़ के इलाक़े में भेजा गया था, आप की पूरी क़ौम मूर्तिपूजक थी, नमरूद बादशाह मूर्ति पूजा का विरोधी न था परन्तु खुद को खुदा कहता था। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सब से पहले अपने बाप को मूर्ति पूजा से रोका, बाप बहुत नाराज हुआ घर से निकाल दिया आप बाप से अलग हो गए परन्तु अपना काम एक अल्लाह की इबादत की तब्लीग का, जारी रखा। नमरूद बादशाह से वाद विवाद हुआ बादशाह ला जवाब हुआ परन्तु अपनी खुदाई पर अड़ा रहा। क़ौम ने मूर्ति पूजा न छोड़ी, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मौक़ा पा कर एक दिन मूर्तियां तोड़ डालीं, क़ौम ने क्रोधित हो कर आग का बहुत बड़ा अलाव जलाया और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उस में फेंक दिया अल्लाह ने चमत्कार दिखाया और आग इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर ढंडी हो गई और आप सुरक्षित और जीवित रहे, इतना बड़ा चमत्कार देख कर भी क़ौम ईमान न लाई सिर्फ इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे लूत अलैहिस्सलाम ईमान लाए। फिर कुछ समय पश्चात इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी पत्नी के साथ अल्लाह के हुक्म से मुल्क शाम चले गए। लूत अलैहिस्सलाम भी शाम चले गए इब्राहीम अलैहिस्सलाम को शाम के रास्ते में एक बड़ी परीक्षा से गुज़रना पड़ा लेकिन अल्लाह ने मदद की, मिस्र के बादशाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पत्नी "सारा" से प्रभावित हो कर उन को हाजर (हाजिरा) नाम की एक दासी उपहार में दी, हज़रत सारा ने "हाजर" को अपने पति इब्राहीम को भेंट कर दिया इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हाजर को अपनी बीवी बना लिया हज़रत इब्राहीम शाम पहुंचे तो उन की आयु

लगभग 87 वर्ष की हो चुकी थी। हज़रत सारा बाँझ थीं इसलिए अब तक कोई औलाद न थी, हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह तआला से नेक औलाद देने की दुआ मांगी, दुआ क़बूल हुई, हज़रत हाजर से एक बच्चा पैदा हुआ इस्माईल अलैहिस्सलाम नाम रखा गया। परन्तु फिर भारी परीक्षा शुरु हुई। अल्लाह का आदेश हुआ कि इन माँ बेटे को मक्के की सूखी पहाड़ियों के बीच में छोड़ आओ। इब्राहीम ने आदेश का पालन किया, वहां बेटे पर क्या गुज़री और क्या चमत्कार जाहिर हुआ और इस्माईल अलैहिस्सलाम का पालन पोषण कैसे हुआ इस विस्तार को हम छोड़ते हैं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह के आदेश से जब तक शाम से मक्का आते और अपने प्रिय पुत्र तथा प्रिय पत्नी हाजर से मिल कर संतोष प्राप्त करते, परन्तु जब इस्माईल अलैहिस्सलाम बड़े हुए और कुछ आलिमों के निकट 12,14 वर्ष के हुए तो फिर बड़ी परीक्षा ली गई।

अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को स्वप्न दिखाया कि वह अपने प्रिय सुन्दर बेटे इस्माईल को ज़ब्ह कर रहे हैं। नबियों का स्वप्न सच्चा होता है इसलिए वह समझ गए कि मुझे ऐसा करने का आदेश हो रहा है। उन्होंने एकान्त में अपने बेटे इस्माईल से इस का ज़िक्र किया। इस्माईल भी तो नबी बाप के बेटे थे बोले, अब्बा जान यह तो रब का आदेश है इस को कर डालिए, इनशाअल्लाह आप मुझे साबिर (धैर्यवान) पाएंगे, अत्एव इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बेटे इस्माईल को ले कर मक्का से मिना गए, रास्ते में तीन जगहों पर शैतान ने इब्राहीम को इस काम से रोकने की कोशिश की इब्राहीम ने तीनों जगह शैतान को कंकरी मार कर भगाया, इस अमल की यादगार में इस उम्मत के हाजियों को उन तीनों जगहों पर खास दिनों में कंकरी मारने का आदेश है। जब बाप बेटे मिना पहुंच गए तो बेटे ने बाप से कहा, अब्बा जान मुझे लिटा कर अच्छी तरह रस्सी से बांध दीजिए ताकि मैं आपके काम में रुकावट न बन सकूं, ज़ब्ह से पहले आप अपनी आंखों पर पट्टी बांध लीजिए ताकि मुझे देख कर आप की दया आप के काम में रुकावट न बने ज़रा ध्यान दीजिए!

अल्लाह के प्रिय नबी इब्राहीम अलैहिस्सलाम ईराक़ में बड़े लम्बे समय तक क़ौम को अल्लाह का दीन पहुंचाते रहे इस बीच क़ौम को प्रभावित करने के लिए उनकी नाना प्रकार की उच्च कोटि की परीक्षाएं भी हुई लेकिन क़ौम टस से मस न हुई अन्ततः आप अल्लाह के आदेश से हिजरत कर के शाम चले गए अब आप की आयू लगभग 87 वर्ष की हो चुकी थी कोई संतान न थी आपने अल्लाह से नेक संतान मांगी अल्लाह ने संतान प्रदान की यह वही संतान है जो आज जवानी के क़रीब है, अल्लाह तआला के हुक्म से उसी इकलौती

संतान को बाप ने मिना के मैदान में ज़मीन पर लिटा कर हाथ पैर बांध दिये हैं अपनी आंखों पर पट्टी बांध रखी है, तेज़ छुरी गले पर चला रहे हैं क्या दुखद दृश्य है, ज़मीन व आसमान में सन्नाटा है फिरिश्ते तक थर्रा रहे हैं।

क्या इब्राहीम अलैहि–स्सलाम यह सोच कर बेटे के गले पर छुरी चला रहे हैं कि कोई चमत्कार ज़ाहिर होगा और गला न कट सकेगा, मैं समझता हूं ऐसा न सोचा होगा बल्कि समझा होगा कि छुरी अपना काम करेगी और मुझे अपना काम करना है।

क्या हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के सिर पर जब आरा चला तो क्या उन्होंने यह सोचा होगा कि चमत्कार ज़ाहिर होगा और आरा न चल सकेगा, नहीं नहीं उन्होंने सोचा होगा कि आरा अपना काम करेगा और आरा ने काम किया वह अल्लाह के लिए कुर्बान हो गए।

क्या फ़िरऔन ने जब ईमान लाने वाले जादूगरों को हाथ पैर काट कर सूली देने की धमकी दी तो क्या उन ईमान लाने वाले जादूगरों ने यह सोचा होगा कि कोई चमत्कार ज़ाहिर होगा और फ़िरऔन हम लोगों को मार न सकेगा, नहीं नहीं उन्होंने यही सोचा होगा कि फिरऔन हम लोगों को शहीद कर डालेगा लेकिन हम को हक़ पर जान देना क़बूल है। तभी तो उन्होंने फ़िरऔन से कह दिया था "तेरे बस में जो है वह कर गुज़र" और फ़िर वह सब शहीद कर दिये गये थे, यह सब अल्लाह के राज़ हैं जिन को समझ पाना सरल नहीं है।

खुद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब आग के बड़े अलाओ में डाला जा रहा था तो क्या उन्होंने सोचा होगा कि चमत्कार ज़ाहिर होगा और आग मुझे जला न सकेगी नहीं नहीं उन्होंने तो यही समझा होगा कि आग अपना काम करेगी मुझे हक़ पर रहना है चाहे आग में जला दिया जाऊँ। अतएव वह आग में फेंक दिये गये मगर अल्लाह को यह मंजूर था कि एक बड़ा चमत्कार ज़ाहिर हो और उन की क़ौम पर सत्य सिद्ध करने की समस्त प्रक्रियाएं पूरी हो जाएं, फिर अभी उन की पीठ से हज़रत इस्माईल और हज़रत इस्हाक़ को पैदा होना था अतः आग को आदेश हुआ कि इब्राहीम पर ठंडी हो जा और वह ठंडी हो गई और इब्राहीम अलैहिस्सलाम जीवित रहे।

इसी प्रकार जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बेटे के गले पर छुरी चलाई तो यही समझे कि छुरी अपना काम करेगी। लेकिन अल्लाह को कुछ और करना था हज़रत इस्माईल की नस्ल में अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आना था इसलिए हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को अभी जीवित रहना था अतः अल्लाह ने हज़रत जिबरील

को हुक्म दिया कि जन्नत से एक दुम्बा ले जा कर हज़रत इस्माईल की जगह इस तरह लिटा दो कि इब्राहीम को ख़बर न हो, हज़रत जिबरील ने ऐसा ही किया, जो छुरी हज़रत इस्माईल के गले पर चल रही थी और गला कट नहीं रहा था वह अब दुम्बे के गले को काट रही थी, जब आवाज़ आई कि ऐ इब्राहीम तूने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया तो इब्राहीम ने समझा कि मेरे ख़्वाब की तस्दीक़ (पुष्टि) हो गई और उन्होंने आंखों की पट्टी खोली और यही समझे कि छुरी ने अपना काम कर दिया होगा। हां छुरी ने अपना काम किया मगर दुम्बे के गले पर, हज़रत इस्माईल अलग खड़े थे। हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह का शुक्र अदा किया अल्लाह ने फ़रमाया हम अपने नेकूकार बंदों को इसी तरह बदला देते हैं।

अल्लाह तआला ने अपने प्रिय नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर विशेष दया की और फैसला किया कि उन की याद, आने वाली उम्मतों में जारी रहे अतएव हज की इबादत उन्हीं की याद दिलाती है, कुर्बानी की इबादत भी उन की याद दिलाती है यह यादें धनवानों में जारी हैं, साधारण मुसलमानों में हर नमाज़ में दुरूदे इब्राहीमी का पढ़ना उन की और उनकी संतान की याद दिलाता है। हज में शैतानों को कंकरियां मारना उनकी याद दिलाता है, हज में सफा और मरवा के बीच चलना (सई करना) और ज़म ज़म पीना हज़रते हाजर और हज़रते इस्माईल अलैहिस्सलाम की याद दिलाता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने एक विशेष पुरस्कार यह दिया कि उन की बांझ पत्नी "सारा" से हज़रत इस्हाक़ को पैदा फरमाया जो अल्लाह के नबी हैं फिर उन से हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम कों पैदा किया और उन से हज़रत यूसुफ नबी को पैदा किया। उन की सन्तान में और भी नबी हुए इसी लिए उन को अबुल अंबिया (नबियों के पितामह) कहा जाता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को वर्तमान तीनों बड़े धर्म (मजाहिब) यहूदी, ईसाई और इस्लाम को मानने वाले उन को बड़ा पैगम्बर मानते हैं।

हम को चाहिए कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से प्रेम रखें और अल्लाह ने वुसअ़त दी हो तो कुरबानी के दिनों में कुरबानी ज़रूर करें।

नोट:- बाज़ रिवायात से यह मालूम होता है कि जब हज़रत इस्माईल के गले पर हज़रत इब्राहीम छुरी चला रहे थे और छुरी को हुक्म था कि वह गला न काटे उसी वक़्त आवाज़ आई थी कि ऐ इब्राहीम तुम ने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया और उनको जन्नत का एक दुम्बा फ़िरिश्ते के ज़रिए दिया गया कि इस को ज़ब्ह करो और हज़रत इब्राहीम ने उसको ज़ब्ह किया। नतीजा दोनों का एक ही है कि हज़रत इस्माईल को अल्लाह ने बचा लिया और उन के बदले में दुम्बा ज़ब्ह किया जाना क़बूल फ़रमाया। ◆◆

मेरे जीवन का ऐतिहासिक दिन

—हज़रत मौलाना अली मियां नदवी (रह0)

नोट:-देश की बिगड़ती स्थिति से चिन्तित हो कर विश्व के महान विचारक मौलाना अली मियां नदवी रह0 ने वर्ष 1977 में देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा की जो बड़ी सफल रही। देशवासियों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाया। मौलाना का यह ऐतिहासिक भाषण है जो आपने इन्दौर हाईकोर्ट के भव्य भवन के कम्पाउन्ड में दिया था। इसमें बड़ी संख्या में अधिवक्ता, न्यायविद आदि उपस्थित थे, जिस की अध्यक्षता हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री एस0डी0 सानेधी एडवोकेट ने की, जिनकी गणना मध्य प्रदेश में प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण विधिवेत्ताओं में होती है।

सज्जनो!

मेरे विद्वान और सम्मानित दोस्तो! आज का दिन मेरे जीवन में ऐतिहासिक दिन है, इसलिए कि मैं अपनी ज़िन्दगी में दो बार कोर्ट गया हूं। एक बार तो द्विभाषी (INTERPRETER) की हैसियत से। बहुत ज़माना हुआ हमारे शहर लखनऊ में एक साहब हमारे COLLEAGUE के थे, उन पर किसी ऐसे बाइलाज (BYLAWS) में जो म्युनिस्पिलटी के होते हैं, केस काइम हो गया। वह अरबी बोलते थे, और कोई ज़बान नहीं जानते थे तो मैं अनुवादक (TRANSLATOR) की हैसियत से कोर्ट गया था। लेकिन उस दिन मुक़दमा नहीं हुआ और ख़ारिज हो गया और मैं पेश न हो सका। दूसरी बार अपनी वाल्दा की जायदाद की रजिस्ट्री के सिलसिले में कोर्ट गया था और आज कोर्ट में यह तीसरी हाजिरी मेरे लिए (HISTORICAL) है। मैं मुद्दई की हैसियत से नहीं आया हूं। इसमें तो बड़ी ज़हमत (कष्ट) होती है। मैं आया हूं अच्छे, बुद्धिजीवी, सम्मानित शहरियों के चुनिन्दा जनसमुदाय से मिलने और उनसे बात करने।

लीडरशिप क़ानूनदां तबक़े के हाथ में:-

आप यह जानते हैं कि हिन्दुस्तान की रहनुमाई (नेतृत्व) क़ानून जानने वाले तबके (वर्ग) की और आज भी हिन्दुस्तान की लीडरशिप क़ानूनदानों (LAWYERS) के हाथ में है। महात्मा गांधी से ले कर जवाहरलाल नेहरू तक सर मुहम्मद अली जिनाह, सर तेजबहादुर सपरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, बेरिस्टर आसिफ अली, हिन्दुओं और मुसलमानों के अक्सर लीडर क़ानून दां तबक़े से सम्बन्ध रखते हैं। हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी इसी तबके ने लड़ी। अंग्रेज़ जैसी क़ानूनी और LEGAL दिमाग़ रखने वाली क़ौम का मुक़ाबला LEGAL तरीक़े से करना चाहिए था। अंग्रेज़ अगर कोई ग़लत काम करना चाहता है तो उसे भी क़ानूनी और LEGAL तरीक़े पर करना चाहेगा, और ठीक काम करता है तो वह भी दस्तूरी (वैधानिक) और क़ानूनी

अन्दाज़ में करता है। उसने अपने बड़े–बड़े मुहसिनों (उपकारियों) मसलन लार्ड कलायू आदि पर, जिन्होंने ब्रिटिश इम्पायर की बुन्याद (FOUNDATION) रखी थी। मुक़दमा चलाया और ब्रिटिश पॉर्लियामेन्ट में बरकले का भाषण आपको याद होगा। हिन्दुस्तान में उनके ख़िलाफ लड़ाई भी वही लोग कर सकते थे जो क़ानून के माहिर थे और क़ानून का जवाब क़ानून से दे सकते थे।

मौत और ज़िन्दगी की जंगः–

इसलिए आप हज़रात इस समय भी देश में बहुत अहम रोल (ROLE) अदा कर सकते हैं। इस समय हमारा देश एक खास स्टेज (STAGE) पर पहुंच गया है। एक बहुत बड़ी (CRISIS) को (FACE) कर रहा है। यह क्राइसिस क़ानून का नहीं बल्कि इंसानियत (HUMANITY) का है। यह MORAL CRISIS और ETHICAL CRISIS (चरित्र और आचरण का क्राइसिस) है। इस समय देश लड़ाई के एक दूसरे मैदान में दाख़िल हो रहा है। यह लड़ाई ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई है। इस लड़ाई में आप हज़रात की रहनुमाई (पथ प्रदर्शन) की ज़रूरत है।

मैं इतिहास का विद्यार्थी हूं। मेरा अध्ययन यह कहता है कि तहजीब (CIVILIZATION) और सोसाइटी पर दो युग आते हैं। एक उस समय जब सोसाइटी का आला दिमाग, बुद्धिमान और क़ाबिल तबका (INTELLIGENSIA) अच्छे रुख़ पर चलता है। CONSTRUCTIVE (रचनात्मक) बन जाता है तो उस समय तहज़ीब (सभ्यता) की बहार आ जाती है। सोसाइटी अपनी चरम सीमा (CLIMAX) पर पहुंच जाती है। फिर एक युग वह आता है जब यह ज़िहानत (बुद्धिमानी) DESTRUCTIVE (तबाहकुन) बन जाती है। वह पेशावराना (PROFESSIONAL) बन जाती है और उस को इससे बहस नहीं होती कि सोसाइटी डुबेगी या पार उतरेगी। हमारा समाज तबाह होगा या पनपेगा। उन्हें बस अपनी फीस से मतलब होता है। खुशकिस्मती जब इंसान और इंसानी सोसाइटी को नसीब होती है तो GENIUS (असाधारण बुद्धि वाले) लोग जो बुद्धिजीवी होते हैं और आम लोगों के स्तर से बुलन्द होते हैं, वह सोसाइटी को बचाने की फिक्र करते हैं। वह अपनी सारी होशियारी, सारा TALENT (ज़िहानत), सारा फन, सारी साइंस, अपनी पूरी SKILL अपना तमाम EXPERIMENT (प्रयोग) जो कुछ उनके पास होता है सब कुछ दांव पर लगा कर सोसाइटी को तबाही से बचाते हैं और इसकी परवाह नहीं करते कि उनका अंजाम क्या होगा? पैसा मिलेगा या नहीं मिलेगा, हमारा पेशा कामयाब रहेगा या नाकाम? वह केवल यह देखते हैं कि किसी तरह समाज बच जाये, सोसाइटी डूबने न पाये।

सब डूब जायेंगेः–

इस समय हिन्दुस्तान को आप की ज़िहानत, आपकी कानूनी जानकारी, आपकी मेहनत, आपकी शराफ़त की बेहद ज़रूरत है। यूं समझिये कि एक कश्ती एक नवका तूफान में फंस गई है, ख़ौफ़नाक लहरें मुंह खोले हुए उस की तरफ बढ़ रही हैं। इस नवका में

कुछ कमज़ोर लोग सवार हैं। नाव डूबने के बिलकुल करीब है। ऐसे समय में कोई ऐसा मल्लाह ऐसा खेवनहार आ जाये जो इस कश्ती को पार लगा दे तो वह बहुत बड़ा उपकारी होगा। आज हमारा देश जिस पर हम कश्ती की तरह सवार हैं, उसमें सूराख़ किया जा रहा है। अगर यह कश्ती डूब गई तो अच्छे और बुरे, पढ़े लिखे और अनपढ़, निर्धन और मालदार, छोटे और बड़े, बच्चे और जवान सब डूब जायेंगे। हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कश्ती की मिसाल दे कर यह बात फ़रमाई है कि अगर नीचे के भाग वाले इस में छेद करें तो ऊपर (UPPER CLASS) के लोगों को तमाशाई नहीं बनना चाहिए। इसलिए कि कश्ती डूबी तो वह भी नहीं बचेंगे।

सूराख़ एक ही तरह का नहीं होता। कोई छोटा होता है, कोई बड़ा, कोई खूबसूरत, कोई भद्दा। कोई फाउड़ा मार कर सूराख़ करता है। हमारी सोसाइटी CORRUPT (भ्रष्ट) हो रही है। पूरी सोसाइटी में विभिन्न नश्तरों से सूराख़ किया जा रहा है।

अब आप इंसाफ़ कीजिए मैं इंसाफ़ का नाम इस हाईकोर्ट में लेता हूं और यहां इंसाफ़ की दुहाई देता हूं।

आपके कामनसेंस (COMMONSENSE) को अपील करता हूं। बताइये नीचे सूराख़ हो गया तो क्या हम बचेंगे? आज यही हो रहा है। हिन्दुस्तान से बाहर भी तमाम दुन्या में यही हो रहा है। उन्नीस, बीस का फर्क है। कोई देश यह दावा नहीं कर सकता कि हमारी सोसाइटी आइडियल सोसाइटी है। पूरी इंसानी सोसाइटी करप्ट हो रही है। उस में बगावत है, बेचैनी है, CONFUSION है, FRUSTRATION है। सब परेशान हैं। कोई संतुष्ट नहीं, सुखी नहीं। इस समय तमाम संसार का और तमाम वर्गों का यही हाल है। ऊपर के वर्ग वाले यह नहीं सोचते कि हमारी किस्मत नीचे के वर्गवालों से जुड़ी है।

आप मैदान में निकल आयें:-

इंसान और जानवर में फर्क है। जानवर रोज़ाना मारे जाते हैं, कोई बग़ावत नहीं होती। लेकिन एक इंसान मारा जाए तो खलबली मच जाती है। एक आदमी किसी जुर्म में गिरफ़्तार होता है तो सारी सोसाइटी में चर्चा होती है। हमारे स्वभाव में हमारे नेचर (NATURE) में एक दूसरे का एहसास एक दूसरे से संबंध का जज़्बा कुदरत ने रखा है। एहसास की यह दौलत इसलिए दी गई है कि हम इस से सही काम लें। अपने देश को और पूरे इंसानी समाज को तबाही से बचाएं। एक दूसरे के दुख–दर्द में काम आयें।

आप हज़रात इस बात की सबसे अधिक योग्यता रखते हैं। मुल्क की नाव जो मझधार में घिर कर डांवा डोल हो रही है। उस को बचाने के लिए अपना कुछ समय लगायें। पेशे से हरज करें, अपने पैसे को खर्च करें। अपनी सेवाओं को पेश करें। आप मैदान में निकल आयें। देश के कोने–कोने में पहुंचें और कहें कि यह दुराचरण, इंसानी दुश्मनी, कमज़ोरों की हत्या, बेईमानी,

मुल्क दुश्मीन नहीं होना चाहिए। मैं आप से अपील करता हूं कि आप अपनी ज़िहानत (बुद्धिमानी) और सलाहियत (क्षमता) का रुख़ कुछ इस तरफ भी फेरें।

जंगे आज़ादी में वकील साहिबान पहली पंक्ति में थे। आज भी देश को बचाने और संवारने और उसकी निःस्वार्थ सेवा के लिए उन्हें आगे बढ़ना चाहिए।

आपका पेशा एक सम्मानजनक पेशा कहलाता है। मुझे मालूम है कि पहले ज़माने में अगर किसी शहर में कोई अच्छा बैरिस्टर, एडवोकेट आता था तो सारे शहर में उसकी इज़्ज़त होती थी। इसलिए कि उन्होंने अपनी क़ाबिलियत, योग्यता और सेवा का सिक्का देश में जमा दिया था।

मैं अपना सम्मान समझता हूं कि आज आपके तबक़े से, सोसाइटी के दिमाग़ से मुझे कुछ कहने का अवसर मिल रहा है। मैं आप से केवल यह चाहता हूं कि आप इंसानियत के सम्मान, आदमी की इज़्ज़त के प्रचार के लिए मैदान में आयें।

एक दूसरे को समझने की कोशिश करें:-

ख़ुदा के नज़दीक इंसान बड़ा प्यारा है। आदमी का आदमी होना यह बहुत बड़ी क्वालीफ़िकेशन है। इसके अतिरिक्त उसे और किसी क्वालीफिकेशन की ज़रूरत नहीं। आदमी जिस समय माँ के पेट से पैदा हुआ उसी समय उसके सिर पर दुन्या की सलतनत के उत्तराधिकारी का ताज रख दिया गया। हम इंसान की चीज़ पर प्राथमिकता दें। हम एक दूसरे की कद्र करें। एक दूसरे को समझने की कोशिश करें। एक दूसरे के लिट्रेचर, कल्चर, सिस्टम, सिविलाइजेशन (सभ्यता), रिलिजन (धर्म) को ईमानदारी के साथ सीखने की कोशिश करें।

हज़ार वर्ष से हिन्दू–मुस्लिम भाई इस देश में रहते हैं। पड़ोसी हैं। दीवार से दीवार मिली है लेकिन यह अजीब बात है कि एक दूसरे की प्रारम्भिक बातें, बुन्यादी चीज़ें भी नहीं जानते।

इसकी एक मिसाल देता हूं। एक बार ट्रेन में चंद साथियों के साथ सफर कर रहा था। नमाज़ का समय हुआ। हम ने जमाअ़त से नमाज़ पढ़ी। जब हम नमाज़ में रुकूअ़ और सज़दे में जाते हैं तो अल्लाहु अक़बर (अल्लाह महान है) कहते हैं। हमारे साथ सफ़र करने वाले एक हिन्दू भाई ने, जो पढ़े लिखे अफ़सर थे, नमाज़ के बाद पूछा "मोलवी साहब! आप जब नमाज़ पढ़ते हैं तो क्या अक़बर बादशाह को याद करते थे?"

देश में हर जगह मस्जिदें हैं। हर समय अज़ान, नमाज़ में अल्लाहु अक़बर की आवाज़ आती होगी, लेकिन उन्होंने कभी ख़्याल नहीं किया कि पूछें "अल्लाहु अक़बर" का अर्थ क्या है? उसे क्यों बोला जाता है? इसी तरह हमारे हिन्दू भाई की बहुत सी बातें होंगी जिन की जानकारी हमें होनी चाहिए। बिना किसी हीन–भाव के यह जानकारियां हासिल की जा सकती हैं।

हमारे इस सफ़र में इस मीटिंग का बहुत महत्व है कि हमें मौक़ा मिला कि अपने विचार और एहसास

(FEELINGS) को आप जैसे पढ़े–लिखे लोगों के सामने पेश कर सका। खुदा करे कि और शहरों में भी ऐसे अवसर बराबर मिलें, जिससे हम एक दूसरे को समझें। हमदर्दी (सहानुभूति) मोहब्बत और सम्बंध पैदा हो। मिलने जुलने से बहुत सी बातें मालूम होती हैं। इसमें बड़े फायदे हैं। हमारे बीच सोशल सम्बन्ध होने चाहिए। आप का धर्म क्या कहता है? आप भी मेरे बारे में जानें। मेरे धर्म के बारे में जानकारी हासिल करें।

यह अचम्भे की बात है कि विदेशों में हिन्दुस्तानी बड़े प्रेम से मिलते हैं, परन्तु अपने वतन में नहीं मिलते।

मैं जब अमरीका में था और मेरी आंख का आपरेशन हुआ था तो उस हास्पिटल के एक हिन्दू डॉक्टर मेरा हिन्दुस्तानी नाम देख कर मिलने आये और रोज़ाना बड़ी मोहब्बत से मिलते रहे। यह केवल वतन का रिश्ता था जो प्रदेश में प्रेम की सौग़ात बन गया। यह बात तो वतन में और अधिक होना चाहिए। यह बहुत अनुचित बात है कि आदमी दूसरे आदमी से डरे या उसे सन्देह की दृष्टि से देखे।

इस काम में आप हज़रात की कोशिश की बहुत ज़रूरत है। आप जो समय कोर्ट में देते हैं, अपने मुअक्किलों को देते हैं उस में थोड़ा सा समय ग़लत फ़हमियों को दूर करने और गुडविल (GOOD WILL) का माहौल पैदा करने, इंसानियत का सम्मान दिलों में बैठाने के लिए दें। इंसान–इंसान है, चाहे वह किसी भी धर्म व समुदाय का हो। वह हमारा भाई है उससे हमेशा प्रेम करना चाहिए। इस से सारी मुसीबत, सारे दुख–दर्द ख़त्म हो जायेंगे।

हम शुक्रगुज़ार हैं कि आप ने हमें बुला कर विश्वास का इज़हार (अभिव्यक्ति) किया, प्रेम का प्रदर्शन किया और मिल कर बैठने का अवसर दिया।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि हम एक सफर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे, आप पाखाना व पेशाब के लिए तशरीफ ले गये और हमने एक लाल परिंद देखा जिस के साथ दो बच्चे थे, हम ने उसके दोनों बच्चे पकड़ लिए पस वह लाल चिडिया आई और अपने पर जमीन पर फैला दिये, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और फरमाया किस ने इसके बच्चे को पकड़ कर इस को तकलीफ दी है, उसके बच्चे छोड़ दो, और आप ने चूंटी की एक वादी देखी जिस को हमने जला दिया था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किस ने जलाया है हमने अर्ज किया या रसूलुल्लाह यह काम हम से हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इंसान को न चाहिए कि वह किसी को आग का अजाब दे, आग का अजाब तो आग का परवरदिगार ही देता है। (अबू दाऊद) ◆◇◆

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

पवित्र कुर्आन की मौलिक शिक्षाएं

–हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
–हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

एकेश्वरवाद के अंतर्गत दूसरी वास्तविकतायें:–

यहाँ प्रश्न यह है कि समस्त सांसारिक व्यवस्थाएं तथा उसमें मनुष्य को जो अधिकार या विवशता प्रदान की गई है उस का क्या अर्थ है तथा उसका क्या उद्देश्य है इसलिए की हर व्यवस्था का कोई उद्देश्य होता है अतः न तो यह सृष्टि न तो उद्देश्य रहित होगी और न ही मानव का अस्तित्व उद्देश्य रहित होगा। अतएव पवित्र कुर्आन में आया है अनुवादः तो क्या तुम ने यह समझा था कि हमने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और यह कि तुम्हें हमारी ओर लौटना नहीं है?

(अल–मोमिनून–115)

देखना यह है कि वह उद्देश्य क्या हैं? प्रत्यक्ष है कि हम इस उद्देश्य को पवित्र कुर्आन ही से मालूम कर सकते हैं अतएव पवित्र कुर्आन में आया है, अनुवादः "वास्तव में यह कुर्आन वह मार्ग दिखाता है जो सब से सीधा है और उन मोमिनों को, जो अच्छे कर्म करते हैं, शुभ सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा बदला है।

और यह कि जो आखिरत को नहीं मानते उनके लिए हम ने दुखद यातना तैयार कर रखी है।"

(बनी इसराईलः 9–10)

एक और जगह आया है, अनुवादः "जो कोई शीघ्र प्राप्त होने वाली को चाहता है उसके लिए हम उसी में जो कुछ किसी के लिए चाहते हैं शीघ्र प्रदान कर देते हैं। फिर उस के लिए हम ने जहन्नम तैयार कर रखा है जिस में वह बुरी दशा में और ठुकराया हुआ प्रवेश करेगा।

शीघ्र प्राप्त होने वाली से तात्पर्य है केवल सांसारिक लाभ।

और जो आखिरत चाहता हो और उसके लिए ऐसा प्रयास भी करे जैसा कि उसके लिए प्रयास करना चाहिए और वह हो मोमिन, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके प्रयास की कद्र की जाएगी।"

(बनी इसराईलः 18–19)

सबसे पहले अपने पालनहार को इस समस्त सृष्टि का अकेला निर्माता तथा स्वामी समझना और यह समझना कि वह एक है और सबसे बड़ा है तथा उस की ओर से मानव जाति को समझाने तथा उन को सत्यमार्ग दिखाने के लिए जो अंबिया (ईशदूत) नियुक्त होते रहे हैं उनको स्वीकार करना और उन की समस्त बातों को निर्माता का संदेश तथा आदेश लाने वाला समझना और मानना आवश्यक है और फिर इस बात पर विश्वास रखना इस जीवन के पश्चात एक और जीवन मिलेगा (जो कभी समाप्त न होगा) उस जीवन में सांसारिक जीवन के कर्मानुसार पुरस्कार मिलेगा या सजा मिलेगी तौहीद अर्थात पालनहार को केवल एक मानना रिसालत अर्थात

अल्लाह के नबियों और रसूलों को मानना, अखिरत अर्थात अगले जीवन को मानना इन तीनों मौलिक बातों का मानने के साथ यह मानना कि फिरिश्ते भी अल्लाह की मखलूक़ हैं उनके जिम्मे अल्लाह ने जो काम कर दिए हैं वह उन को करते रहते हैं वह पाप रहित हैं, वह अल्लाह की अवज्ञा नहीं कर सकते उनमें सबसे बड़ा दर्जा हज़रत जिब्रील अलै0 का है जिनके जिम्में अल्लाह का संदेश और आदेश अल्लाह के नबियों तक पहुंचाना था, दूसरे अनगिनत फिरिश्ते अपने अपने कामों में लगे रहते हैं इन सब बातों के साथ यह मानना भी आवश्यक है कि इस संसार में अपितु समस्त सृष्टि में जो कुछ होता है वह अल्लाह की ओर से होता है और मनुष्य के साथ जो कुछ होता है वह अल्लाह के ज्ञान में होता है और उसकी अनुमति से होता है। इन बातों को इन शब्दों में स्वीकार कराया गया है, अनुवादः "ईमान लाया मैं (विश्वास किया) अल्लाह पर और उसके फिरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उस के रसूलों पर और कियामत के दिन पर और तक़्दीर पर अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह ही की तरफ से और मौत के बाद उठाए जाने पर।

इस इकरार (स्वीकार) के शब्दों को "ईमाने मुफस्सल" कहते हैं।

अल्लाह तआ़ला के आज्ञापालन के दो मौलिक भाग हैं, एक विशवास दूसरे विशवास के अनुकूल कर्म।

मनुष्य जो विश्वास रखता है प्रायः उसके अनुकूल ही उसके कर्म होते हैं इस्लाम ने जो सत्य विशवास दिया है उसने यही बताया है कि अल्लाह ही सृष्टि का निर्माता है वही सब का पालनहार है, वही सर्व शक्तिमान है और वही केवल पूज्य है।

यह केवल कल्पित बातें नहीं हैं अपितु वास्तविक मान्यताएं हैं परन्तु जिन के हाथ से इस्लाम का दामन छूट गया उसने केवल अपने अनुमान से अपना विशवास रच लिया और जिस वस्तु में और जिस जीव जंतु में अपने से अधिक शक्ति देखी या उसके सामने अपने को विवश पाया उसके सामने झुक गया और उसको पूजने लगा तथा उसको हानि व लाभ का मालिक समझने लगा यही शिर्क है। यही अल्लाह के साथ साझी ठहराना है। जो अल्लाह तआला को अत्यंत अप्रिय है और बड़े क्रोध प्रकोप का कारण है। अरब देश में पहले शिर्क नहीं था वहां के लोग हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के अनुयायी एक खुदा के पुजारी थे तत्पश्चात वहां अ़म्र नामी एक व्यक्ति पैदा हुआ जिस ने शाम की यात्रा की वहां मूर्ति पूजा देखी जो उसे भली लगी वह वहां से मूर्ति पूजा की कल्पना को अरब देश (जज़ीरतुल अरब) में लाया और "हुबल" नाम के बुत को खुदाई सिफात वाला बता कर उसके सामने झुकने को लाभ का साधन बताया और बताया कि यह हानि व लाभ का मालिक है

उसकी यह बातें अरब देश में चल पड़ीं और वहां मूर्ति पूजा होने लगी यहां तक कि हर गोत्र का एक बुत बन गया फिर हर गोत्र ने अपना बुत काबे में ला कर रख दिया फिर वह समय आया कि काबे में 360 बुत रखे जा चुके थे।

अल्लाह के नबियों का काम यह होता था कि उन की कौम में विश्वास (अकीदा) और उपासनाओं (इबादत) में जो ग़लत बातें आ गई हों उन को दूर करें, और पिछले नबियों के संदेशों को जीवित करे अल्लाह के अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भी यही काम थे उन्होंने खुल कर यह दावत दी कि "मत उपासना करो मगर केवल अल्लाह की" और यही पिछले नबियों की दावत थी और कहा कि लाभ तथा हानि केवल अल्लाह के हाथ में है और सृष्टि में किसी को उस की बराबरी प्राप्त नहीं इस सृष्टि में किसी को भी अल्लाह के किसी भी गुण में साझी ठहराना अल्लाह की अवज्ञा और महा पाप है। अल्लाह इस सृष्टि का निर्माता है और इस का मालिक है उसके अतिरिक्त कोई भी चाहे जितना बड़ा हो यहां तक कि फिरिश्ते और अल्लाह के नबी व रसूल सब अल्लाह के बन्दे हैं वह सब के सब अल्लाह के आज्ञाकारी और उपासक हैं।

अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में वह सारी बातें मौके मौके से बयान कर दी हैं जिन की मानव जाति को ज़रूरत थी उन सभी बातों में सर्वप्रथम विश्वास (अकीदा) के बारे में बताया कि अपने पालनहार को एक मानो उसी ने तुम सब को जन्म दिया और जीवन यापन की समस्त सामग्रियां प्रदान कीं इस पर अल्लाह की कृतज्ञता (शुक्र) प्रकट करो और उसके आदेशों को मानो तथा अवज्ञा मत करो और यह समझो कि मिट्टी से बनाए गए हो अतः मिट्टी की भांति रहो घमंड न करो यह अल्लाह की कृपा है कि उस ने तुम मिट्टी से बने इन्सान को दूसरी समस्त सृष्टि से ऊँचा पद प्रदान किया परन्तु यह उच्च पद मनुष्य को उसी वक्त मिलेगा जब वह अल्लाह का आज्ञाकारी हो। परन्तु यदि अवज्ञाकारी बनोगे और नाशुक्रे (कृतघ्न) बनोगे तो कठोर दण्ड पाओगे पवित्र कुर्आन की सू–रए–अत्तीन में है अनुवादः "कसम है इंजीर और ज़ैतून की और तूरे सीना की और शांतिपूर्ण भूमि मक्के की, निस्संदेह हम ने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया, फिर हमने उसे निकृष्टतम दशा की ओर लौटा दिया, जब कि वह स्वयं गिरने वाला बना, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, तो उन के लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है। अब इसके बाद क्या है, जो बदले के विषय में तुम्हें झुठलाए? क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं?" दूसरी जगह सूरतुल अस्र में फरमाया, अनुवादः

"कसम है ज़माने (समय) की वास्तव में मनुष्य घाटे में

है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और भले काम किए और एक दूसरे को हक की ताकीद की, और एक दूसरे को धैर्य की ताकीद की।"

विश्वास (अक़ीदा) की जिन बातों की ओर पवित्र कुर्आन में ध्यान दिलाया गया उन में सबसे पहले अक़ी–दए–तौहीद (अल्लाह को एक मानना) है यानि अल्लाह ही को निर्माता तथा स्वामी मानना और उसी को उपास्य मानना और उसी की उपासना करना और तमाम नबियों पर ईमान लाना और अपने समय के नबी की बातें मानना और उन का अनुकरण करना उन तमाम नबियों के अन्त में अल्लाह ने अपने अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा अल्लाह तआला ने उनको सब नबियों से ऊँचा मकाम अता किया और उन को किसी एक क़ौम के लिए नहीं भेजा अपितु पूरे संसार की पूरी मानव जाति के लिए भेजा और किसी सीमित काल के लिए नहीं अपितु कियामत तक के लिए भेजा।

अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान के बयान के बाद यानि तौहीद व रिसालत के बाद आख़िरत का अक़ीदा है कि इस संसार के समाप्त के पश्चात जिनों और इंसानों को सजा और बदला देने के लिए फिर जीवन दिया जाएगा फिर कर्मों का लेखा जोखा होगा और उसके अनुकूल सजा मिलेगी या पुरस्कार मिलेगा तौहीद, रिसालत और आखिरत के विश्वास के साथ साथ अल्लाह की उतारी हुई किताबों का मानना जैसे जबूर, तौरेत, इंजील और पवित्र कुर्आन, फिरिश्तों को भी मानना है जो अल्लाह के आदेशों पर अपने कामों में लगे हुए हैं उन में हज़रत जिब्रील अलै0 भी हैं जिन का अहम काम अल्लाह के अहकाम और अल्लाह की किताबें अल्लाह के नबियों तक पहुंचाना था।

अल्लाह सर्व शक्तिमान है उस को अपनी सृष्टि में हर प्रकार का अधिकार है उसी ने यह सृष्टि रची और सृष्टि की हर वस्तु को विशेष गुण प्रदान किया वह जब चाहे और जो परिवर्तन चाहे कर सकता है।

इन मौलिक बातों को बताने के लिए अल्लाह तआला समय समय पर अपने नबियों और रसूलों को भेजता रहा है पवित्र कुर्आन में उन नबियों और रसूलों का जहां भी जिक्र आया है वहां उन के संदेशों का जिक्र भी आया है कि केवल एक अल्लाह की उपासना करो, उसके आदेशों को मानों और किसी को उस का साझी न ठहराओ और फरमाया, अनुवादः–

"निःसंदेह अल्लाह के साथ साझी ठहराना बहुत बड़ा जुल्म है"।

(लुक़मानः 13)

और यह कि अल्लाह तआला जिस गुनाह को चाहेगा मुआफ कर देगा लेकिन शिर्क (अल्लाह के साथ साझी ठहराने) को तौबा किए बिना मरने वाले को मुआफ न करेगा, फरमाया, अनुवादः–

शेष पृष्ठ....33 पर

मसाजिद और हमारे फराइज़

—अबू ओमामा

हर मजहब के पैरोकार अपनी इबादतगाहें बड़े ही अक़ीदत से बनाते हैं और उसकी तामीर में दिल खोलकर हिस्सा लेते हैं। चुनांचे गिरजाघरों को देखिए तो मालूम होता है कि कितने सलीके से इमारत तामीर की गयी। ये इमारतें पुरानी हों या नई सब की सब बहुत ही उम्दगी से मेनटेन नज़र आती हैं। यही हाल मन्दिरों का भी है। मन्दिर के पुजारी हज़रात पूजा के अलावा मन्दिर को धोना उसको साफ सुथरा रखने के काम को भी बड़ी दिलचस्पी से अन्जाम देते हैं। इबादतगाहें कुछ हद तक अपने मजहब के मक़ामी पैरोकारों के ज़ौक ओ शौक़ और उनकी मआशी हालत की अक्कासी भी करती हैं। इसी तरह अगर मसाजिद को देखें, बिलखुसूस सऊदी अरब, कुवैत, यू0ए0ई0, ओमान, मराकश, इराक मिस्र तुर्की, ईरान, ब्रुनई अमेरिका इंग्लैण्ड कनाडा, आस्ट्रेलिया की मस्जिदें तो वहां की मसाजिद निहायत ही उम्दा खूबसूरत पुरशिकोह साफ सुथरी, नज़र आती हैं। जरूरत के मुताबिक ये मसाजिद जदीद सहूलियात से भी आरास्ता हैं। इन मसाजिद की देख रेख वहां की हुकूमतें करती हैं और मकामी लोग भी करते हैं।

हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में एक रिपोर्ट के मुताबिक करीब तीन लाख छोटी बड़ी मसाजिद हैं (नव भारत टाइम्स 20.06.2016)। इनकी देख रेख, कुछ को छोड़ कर, उमूमन मकामी लोग ही करते हैं। हिन्दुस्तान में जो मसाजिद हैं उनको यहां के मुसलमानों ने बड़ी जद्दोजेहद के बाद मेहनत, अक़ीदत और खुलूसेनियत से सदियों में तामीर किया है। इसलिए उनकी बेहतर देख रेख और भी ज़रूरी है। किसी भी मज़हब की शनाख्त उसके पैरोकारों के साथ साथ उनकी इबादतगाहों से भी होती है। लिहाज़ा ज़रूरी है कि हम अपने आमाल अपने अखलाक की इस्लाह के साथ साथ खिदमते मस्जिद को भी अपना शिआर बनाएं। आमतौर पर लोग मस्जिद की खिदमत पेशइमाम, मोअज़्ज़िन की जिम्मेदारी समझ कर अपने आपको इस जिम्मेदारी से बरी कर लेते हैं। हकीकत में ये जिम्मेदारी तो हर मुसलमान की है। मस्जिद अल्लाह का घर है इसे करीने के साथ साफ सुथरा और महफूज़ रखना हमारा फ़र्ज़ है। मौजूदा वक्त और हालात का तक़ाज़ा भी है कि हम मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ अपने फराइज़ की अदाएगी में ज़रा भी कोताही न बर्तें और उससे मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी दस्तावेज व दीगर अहम काग़ज़ात हमेशा मुकम्मल और महफूज़

रखें। इस मज़मून का मक़सद हरगिज़ ये नहीं है कि बेजा नुमाइश और गैर ज़रूरी सजावट पर इख़राजात किये जायें बल्कि मस्जिद में जो भी चीज़ें दस्तियाब हों उनको सलीके और करीने से रखने और जो सहूलतें मुहैया हों उनका बेहतर और ज़रूरत भर इस्तेमाल किये जाने पर जोर दिया जाना है। नमाज़ अपने तमाम फवाएद के सथ साथ नज़्म ओ ज़ब्त भी सिखाती है। चन्द छोटी छोटी बातों का ख्याल करके हम अपनी मसाजिद की हिफ़ाज़त कर सकते हैं उन्हें और भी बेहतर बना सकते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमया "सात आदिमियों को अल्लाह तआला अपने साये में जगह देगा जिस रोज सिवाये उसके साये के कोई साया न होगा। उनमें से एक वो शख्स भी है जिसका दिल मस्जिद में लगा हुआ हो"। (सही अल बुखारीः, सही मुस्लिमः 51030)।

जूते चप्पलः-

नमाज़ियों के चप्पल जूते रखने के लिए मुनज़्ज़म इंतजाम कम ही मस्जिदों में देखने को मिलता है। जूते चप्पलों की हिफाज़त की गर्ज़ से कुछ लोग अपने जूते चप्पल मस्जिद के बिलकुल अन्दर ले जा कर रख लेते हैं। ये बात मुनासिब नहीं मालूम होती है। जूते चप्पलों को तरतीब से रखने की मख़सूस जगह होनी चाहिए। नमाज़ियों के जूते चप्पलों को रखने के बेहतर नज़्म के लिए पिजनहोल किस्म के लकड़ी या टिन के रैक बना कर एक किनारे रखे जा सकते हैं या फिर किनारे दीवार में नस्ब किया जा सकता है। इसमें एक सलीक़ा नजर आएगा। जूते चप्पलों के गुम हो जाने की गुंजाइश भी कम होगी। नमाज़ के बाद अपने जूते चप्पलों को ढूंढने में नमाज़ियों को आसानी भी होगी।

बेतरतीब बिजली के तार, कलैण्डर, और दीगर सामान वगैराः-

कुछ मस्जिदों में बिजली माइक इनवेटर के बेतरतीब तार इधर उधर दीवारों से झूलते रहते हैं जिसको सलीके से रखा जा सकता है ताकि देखने में भला लगे। इसी तरह कुछ जगहों में कई कई साल पुराने कलैण्डर और इसी तरह की चन्द चीजें दीवारों से लटकी होती हैं जिन्हें मशविरा करके हटाया जा सकता है। नये कलैण्डर या जरूरी चीजों को तरतीब /सलीके के साथ रखा या दीवारों पर आवेज़ा किया जा सकता है। हर चीज में एक तरतीब और सलीका से माहौल बेहतर बनता है। देखने में भी भला मालूम होता है। कुदरत की हर शै में भी एक सलीका और तरतीब है, हमें यह बात सीखनी चाहिए।

छोटे बच्चों में नमाज़ का शौक़ः-

कभी कभी छोटे बच्चे मस्जिदों में अपने बड़ों के साथ शौक से नमाज़ के लिए आ जाते हैं। नमाज़ के लिए जब जमाअत खड़ी होती है तो सफ के दरमियान उनकी मौजूदगी से नमाज खराब न

हो इस गरज से कुछ लोग बड़ी सख्ती के साथ बच्चों से एकदम हटने, सफ से निकलने या पीछे जाने के लिए कहते हैं। ऐसी सूरत में खासतौर से जुमा, ईदुलफित्र, ईदुल अज़हा के रोज़ छोटे बच्चे भीड़ की वजह से एकदम घबरा जाते हैं और उनकी समझ में नहीं आता की वह किधर जाएं। सितम यह कि उस वक्त अगर उनके गार्जियन ने नियत बांध ली है तो वह बच्चे को गाइड भी नहीं कर सकते कि वो क्या करें। एसे में कई बार कुछ बच्चे भटक जाते हैं। उनको न तो मुनासिब जगह मिल पाती है और न ही वह नमाज पढ़ पाते हैं। कभी कभी यह बच्चे नमाज़ के बाद मस्जिद आने से घबराने और कतराने लगते हैं। छोटे बच्चों के साथ नरमी से पेश आना चाहिए जिससे बच्चे घबरायें नहीं और नमाज़ के लिए मस्जिद में आने का उनका शौक कायम रहे। आखिर यही बच्चे तो मुस्तक़बिल के नमाज़ी हैं जो मस्जिदों को आबाद करेंगें। बच्चों की वजह से नमाज़ खराब न हो, इसका लिहाज़ भी रखना निहायत जरूरी है। इस पर गौर करने की ज़रूरत है। बेहतर नज़्म इसका हल हो सकता है।

रोज़ा इफ़्तार आम पार्टीः-

इफ़्तार के वक्त मस्जिद के एक गोशे में मुख्तलिफ घरों से इफ़्तार के लिए आई हुई इफ़्तारी से मस्जिद में मौजूद कुछ रोजेदार इफ़्तार करते हैं। इस तरह के मुख्तसर इन्तजाम में कोई दिक़्कत नहीं पेश आती है। ये एक अच्छा सिलसिला है जो ज़मानए क़दीम से आज तक बेशतर मस्जिदों में कायम है। पिछली दो दहाईयों में मस्जिद में रोज़ा इफ़्तार पार्टी का सिलसिला भी शुरु हुआ है। माहे रमज़ान में कोई शख्स या फिर मस्जिद की इन्तिजामिया कमेटी एक या दो बार इसका इंतजाम मस्जिद में करती है। कहीं कहीं इफ़्तार के लिए चीजें भी मस्जिद में ही पकती हैं। इस इफ़्तारेआम में मस्जिद के अन्दरूनी हिस्से, मस्जिद की छत, सेहन और यहां तक कि बेरूने मस्जिद भी लोगों की एक बड़ी तादाद बैठ कर इफ़्तार करती है। इफ़्तार व मगरिब की नमाज के बाद लोग अपने घरों को चले जाते हैं। इफ़्तार के बाद खानों की महक मस्जिद में बस जाती है। कभी कभी किसी किसी मस्जिद में इस्तेमाल शुदा डिस्पोजल ग्लास चम्मच झूठी प्लेट और प्लेट में छोड़ी गयी चीजें बाद तक इधर उधर बिखरी नज़र आती हैं जो कुत्ते बिल्लियों को दावत देती हैं। कभी कभी यह चीजें दूसरे दिन तक भी मस्जिद के अन्दर बाहर तक बिखरी नज़र आती हैं, जो किसी भी सूरत मुनासिब नहीं है। इफ़्तारेआम का एहतमाम ज़रूर हो लेकिन इफ़्तार पार्टी व मगरिब की नमाज़ खत्म होते ही इसकी सफाई का पुख्ता इंतजाम होना भी ज़रूरी है। दीन खूबसूरत है और खूबसूरती पसन्द करता है। दुन्या में जो भी मुल्क

साफ नज़र आते हैं उसकी वजह यह है कि वहां के बाशिन्दे गन्दगी नहीं करते हैं और न ही करने देते हैं। हमारे मुल्क के वज़ीरे आजम जनाब नरेन्द्र मोदी साहब के ज़रिये शुरु किया गया स्वच्छ भारत मिशन एक अच्छी पहल है। सफाई बेदारी के इस मिशन से अपनी कालोनियों, अपने घरों, दफ़्तरों और अपनी इबादतगाहों को साफ और मेनटेन रख कर मुल्क को साफ रखने में हम अपना अहम किरदार अदा कर सकते हैं।

मस्जिद का बाहरी हिस्साः-

आम दिनों में भी मस्जिद के बाहरी हिस्से को साफ सुथरा रखने और उसको बराबर मेनटेन करने की हद दर्जा कोशिश होनी चाहिए ताकि हमारी इबादतगाहें अलग और खास नज़र आए। मस्जिद के बाहर नमाज़ियों की साईकिल, स्कूटर, कारें सड़क के किनारे सलीके से पार्क हों ताकि किसी राहगीर को वहां से गुजरने में दिक़्क़त न हो।

सफ़ों के दरमियान कुर्सीः-

मस्जिद में आने वाले लोगों में चन्द नमाज़ी ऐसे भी होते हैं जो अपनी ज़ईफी या किसी बीमारी के सबब खड़े हो कर या फर्श पर बैठ कर नमाज़ नहीं पढ़ सकते मजबूरन उन्हें कुर्सी पर बैठ कर नमाज़ अदा करनी पड़ती है। कुर्सियां सफों के दरमियान जगह जगह रख कर नमाज़ अदा करने से दीगर नमाजियों को दिक़्क़त हो सकती है लिहाजा सफ में कुर्सियां अगर एक ही तरफ रख ली जाएं या पूरी एक सफ ही कुर्सियों की बना दी जाए या हर सफ के शुरु और आखिर में एक एक कुर्सी ऐसे नमाज़ियों के लिए रख दी जाए तो इसमें एक तरतीब नज़र आएगी और ये कुर्सियां ज़ियादा प्रीजेन्टेबिल नज़र आएंगी। इस पर बैठने वाले आसानी से नमाज़ अदा कर सकेंगे और दूसरे नमाज़ियों को सहूलत भी होगी।

वुज़ू का पानीः-

वुज़ू करने के लिए पहले लोटा हुआ करता था। अब भी कहीं कहीं लोटे नज़र आ जाते हैं शहरी मस्जिदों में वुज़ू करने के लिए वज़ूखाने में कई सारे नल लगे होते हैं। कई बार कुछ लोग वुज़ू करते वक्त पूरा नल खोल देते हैं और इससे पानी ज़ाया होता है। पुराने वक्तों में लोटे से वुज़ू करने में पानी के जाया होने की गुंजाइश नहीं होती थी। वुज़ू के लिए ज़रूरत भर पानी के इस्तेमाल पर जोर दिया जाना चाहिए और मुम्किन हो तो नलों में गवरनर लगे हों जिससे पानी नल से बहुत तेज बाहर न जाए, सिर्फ ज़रूरत भर पानी की धार जो वुज़ू के लिए काफी हो नल से बाहर आए।

मस्जिद के अन्दर गर्द मिट्टी और जालों की सफाईः-

मस्जिद की छतों, दीवारों पर लगे जाले, ट्युबलाइट बल्ब पंखों और ए0सी0 माइक स्पीकर स्विच बोर्ड पर

चिपकी हुई गर्द, फर्श पर पड़ी धूल मिट्टी की सफाई एक तय मुद्दत पर पाबंदी के साथ किए जाने को यकीनी बनाया जाना चाहिए।

इस्तिन्जाखानाः-

उमूमन यह देखने में आता है कि कुछ मस्जिदों में सदर दरवाजे के पास ही (अन्दर या बाहर) इस्तिन्जाखाना बना होता है जो सबसे ज़ियादा बेतवज्जही का शिकार होता है। इस्तिन्जाखाना की यह सूरत मस्जिद आने वालों के सामने अच्छी तस्वीर नहीं पेश करती है। मुम्किन है कि जगह की तंगी के सबब इस्तिन्जाखाना दरवाज़े के पास बनाया गया हो। फिर भी जहां तक मुम्किन हो इस्तिन्जाखाना की तामीर के लिए मुनासिब जगह का इन्तखाब और उसकी सफाई पर खासतौर से तवज्जो दिया जाना बेहद ज़रूरी है।

मोअज्जिन खुश आवाज़ः-

मस्जिद में अज़ान देना बड़ा कारेसवाब है। लिहाजा मस्जिद में वक़्त पर पहुंच कर कोई भी शख्स अज़ान दे सकता है लेकिन अब बेश्तर मसाजिद में मोअज्जिन की तक़र्रुरी होती है। मोअज्जिन को अज़ान और उनकी दीगर खिदमात के इवज़ में तनख्वाह दी जाती है। मोअज़्ज़िन की तक़र्रुरी का जब इन्तखाब किया जाए तो ऐसे मोअज़्ज़िन का किया जाए जो खुश आवाज हो। हर रोज 5 बार मोअज़्ज़िन की आवाज़ दूर दूर तक जाती है जो न सिर्फ मुसलमानों को सुनाई देती है बल्कि गैर मुस्लिम भाईयों के कानों तक भी पहुंचती है। मोअज्जिन खुश आवाज की अज़ान से गैर मुस्लिम बिरादरान पर मस्जिद की अज़ान का अच्छा तअस्सुर मुरत्तब हो सकता है और उनके अन्दर मज़हबे इस्लाम को समझने और उसके करीब आने का जज्बा पैदा हो सकता है।

मसाजिद से वक्ते सहर का एलानः-

ये नुक्ता बराहेरास्त खिदमते मस्जिद से तअल्लुक तो नहीं रखता है लेकिन इसका जिक्र यहां ज़रूरी महसूस होता है। रमज़ान के दिनों में सहरी के वक़्त की इबतेदा से ले कर खत्मे सहर तक का वक़्त बताने के लिए कई मसाजिद से वक़्ते सहर का बराबर एलान होता रहता है। कई बार एलान के लिए माईक बच्चों या ऐसे लोगों के हाथों में चला जाता है जिनका न तो तलफ़्फुज़ सही होता है और न ही वो एक जुमला ठीक और मुअस्सिर अन्दाज़ में बोल सकते हैं। सहर के वक़्त रात के सन्नाटे में ये आवाज़ और भी तेज मालूम होती है जो दूसरे अक़ाएद के लोगों को नागवार मालूम हो सकती है। आज के इस दौर में हर शख्श (अमीर हो या गरीब छोटा हो या बड़ा) सभी के पास घड़ी, मोबाईल, इण्टरनेट, नकशा औक़ात इफ़्तार व सहर दस्तयाब होता है। ऐसी सूरत में इस तरह के एलान की ज़ियादा इफादियत नहीं रह जाती है। फिर भी अगर कहीं इस की ज़रूरत महसूस की जाती है

शेष पृष्ठ...33 पर

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: आमतौर से देखा जाता है कि औरतें जानवर ज़ब्ह नहीं करती हैं, यहां तक कि अपनी कुर्बानी का जानवर भी नहीं ज़ब्ह करती हैं, क्या औरतों का ज़बीहा दुरुस्त नहीं है?

उत्तर: मुस्लिम औरत जानवर ज़ब्ह कर सकती है, उसका ज़बीहा दुरुस्त और जाइज़ है, हां यह सहीह है कि औरत ज़ब्ह नहीं करती यहां तक कि अपनी कुर्बानी का जानवर भी ज़ब्ह नहीं करती इसके दो सबब समझ में आते हैं।

1. औरतें मर्द के मुकाबले में ज़ियादा नर्म दिल होती हैं, इसलिए वह ज़ब्ह की हिम्मत नहीं करती हैं, इसका भी इमकान है कि वह अपनी नर्म फितरत के सबब जानवर की गर्दन पर छुरी चलाते वक्त ठीक से छुरी न चला पाऐं और जानवर को मजीद तकलीफ पहुंचे।

2. जानवर के गिराने और काबू करने में दूसरों की भी ज़रूरत पड़ती है और मदद करने वाले महरम मर्द या औरतें नहीं होते इसलिए भी औरत ज़ब्ह नहीं करती यहां तक कि अपनी खुद की कुर्बानी भी ज़ब्ह नहीं करती और दूसरों से मदद लेती हैं।

जानवर को गिराने और उसको काबू करने वाले महरम मर्द या औरतें मुहय्या हों और औरत ज़ब्ह के मसाइल से वाकिफ हो और वह ज़ब्ह करे तो मुस्लिम औरत का ज़बीहा दुरुस्त है।

प्रश्न: नील गाय और हिरन की कुर्बानी दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: जंगली जानवरों की कुर्बानी दुरुस्त नहीं इसलिए नील गाय और हिरन की कुर्बानी दुरुस्त नहीं। कुर्बानी के जानवर के नाम हदीस में आ चुके हैं वह यह हैं— ऊँट (नर या मादा), गाय (नर या मादा), बकरी (नर या मादा), भेंड़ (नर या मादा), यहां भैंस को गाय का हम जिंस माना गया है और गाय को ज़ब्ह करना हमारे मुल्क में कानूनन मना है इसलिए गाय की जगह भैंस (नर या मादा), की कुर्बानी करना चाहिए, दुम्बा जिसको मेढ़ा भी कहते हैं भेड़ की जिंस है इसलिए दुम्बे की कुर्बानी भी सही है।

प्रश्न: जुनुबी का ज़बीहा जाइज़ है या नहीं?

उत्तर: मुस्लिम जुनुबी का ज़बीहा जाइज़ है लेकिन उसको चाहिए कि हालते जनाबत से पाक हो कर ज़ब्ह किया करे।

जुनुबी उसे कहते हैं जिस पर जिमाअ़ (सहवास) या एहतिलाम (स्वप्नदोष) वगैरह से गुस्ल फर्ज़ हुआ हो और उसने अभी गुस्ल न किया हो वह हालते जनाबत में है जुनुबी पाक हुए बिना नमाज़ नहीं पढ़ सकता कुर्आन नहीं पढ़ सकता, मस्जिद में दाखिल नहीं हो सकता। मुसलमान हाइज़ा (रजस्वला) का ज़बीहा भी दुरुस्त है।

प्रश्न: हमारे यहां रवाज है कि कुर्बानी का गोश्त नाई

तक्सीम करता है, और जिस घर में वह गोश्त पहुंचता है उस घर वाले उसको उजरत या इनआम के तौर पर कुछ गल्ला पेश करते हैं इस रस्म का क्या हुक्म है?

उत्तर: यह रस्म ठीक नहीं है। कुर्बानी करने वाला गोश्त खुद ही तक्सीम करे या जिसके जरीए तक्सीम कराए उसको खुद उजरत दे, जिसको गोश्त भेजे उससे कुछ न दिलाए, इस रस्म को खत्म करना चाहिए।

प्रश्न: हमारे देहात में रवाज है कि जब कुर्बानी में बकरा या भेंड़ वगैरह ज़ब्ह किये जाते हैं तो ज़ब्ह किये गये जानवर का कल्ला (सिर) नाई लेता है और कहता है कि यह हमारा हक है इस रस्म का क्या हुक्म है?

उत्तर: यह रस्म शरीअ़त के ख़िलाफ़ है इस को खत्म करना ज़रूरी है, कुर्बानी या अकीका करने वाला ज़बीहे का कल्ला चाहे खुद पका कर खाये या किसी को हद्या करे, नाई को भी दे सकता है, लेकिन अक़ीक़ा या कुर्बानी के जानवर का कोई हिस्सा नाई का हक़ हरगिज़ नहीं है, कल्ले पर भी उसका हक़ नहीं है।

जिस तरह कुर्बानी का गोश्त, अजीज़ों दोस्तों और रिशतेदारों में तक्सीक करते हैं नाई को भी दे सकते हैं लेकिन अगर न दें तो कोई गुनाह नहीं, नाई अगर खिदमत करता है तो उसको खिदमत की उजरत देना चाहिए, कुर्बानी के जानवर में उसका कोई हक नहीं बनता।

प्रश्न: अ़क़ीक़े का क्या हुक्म है?

उत्तर: बच्ची या बच्चे की पैदाइश पर अ़क़ीक़ा हनफी उलमा की तहकीक में मुस्तहब है, लेकिन दूसरे बहुत से उलमा की नज़र में अ़क़ीक़ा करना सुन्नत है, वैसे अगर वुसअ़त हो तो अ़कीक़ा ज़रूर कर देना चाहिए। अ़क़ीक़ा कर देने से नौ मौलूद की बलाओं से हिफाज़त हो जाती है।

प्रश्न: अक़ीक़ा कब करना चाहिए?

उत्तर: बच्चा जिस रोज़ पैदा हुआ उसके सातवें दिन अ़क़ीक़ा करना मुस्तहब है। उस को यूं समझें कि बच्चा अगर मंगल को पैदा हुआ तो उसके सातवें दिन सोमवार (दो शंबे) को अकीका करें और जब भी अ़क़ीक़ा करें पैदा होने वाले दिन से एक दिन पहले करें लेकिन अगर इसका लिहाज़ न हो सके तो कोई हरज भी नहीं है।

प्रश्न: क्या बच्चे की पैदाइश पर अक़ीक़े में दो बकरे और बच्ची की पैदाइश पर एक बकरी जब्ह की जाए?

उत्तर: नहीं यह ज़रूरी नहीं है, अगर कर सके तो बच्चे की तरफ से दो बकरे या भेंड़ ज़ब्ह करे लेकिन अगर बच्चे की तरफ से एक बकरा भेंड़ा या बकरी, या एक भेंड़ ज़ब्ह करे यह भी दुरुस्त है, इसी तरह बच्ची की पैदाइश पर चाहे एक बकरा ज़ब्ह करे या एक बकरी, या भेड़ा या भेंड़ी ज़ब्ह करे सब दुरुस्त है।

प्रश्न: नौ मौलूद के बाल कब उतारे जाएं ज़ब्ह से पहले या ज़ब्ह के बाद?

उत्तर: नौ मौलूद के बाल चाहे ज़ब्ह से पहले उतारे जाएं या बाद में दोनों दुरुस्त है।

प्रश्न: अ़क़ीक़े का जानवर कैसा होना चाहिए?

उत्तर: जिस तरह के जानवर पर कुर्बानी दुरुस्त है उसी तरह के जानवर पर अ़क़ीक़ा भी दुरुस्त है।

प्रश्न: क्या कुर्बानी के बड़े जानवर में अ़क़ीक़े का हिस्सा लिया जा सकता है?

उत्तर: कुर्बानी के बड़े जानवर में अ़क़ीक़े का हिस्सा लिया जा सकता है।

प्रश्न: अ़क़ीक़े का गोश्त और उसकी खाल का क्या हुक्म है?

उत्तर: अ़क़ीक़े का गोश्त और उसकी खाल का वही हुक्म है जो कुर्बानी के गोश्त का है, यानी मुस्तहब है कि एक तिहाई गरीबों में तक्सीम कर दिया जाए, और एक तिहाई अ़ज़ीज़ों में, बाकी एक तिहाई घर वालों के लिए, और खाल अगर बेची जाए तो उसकी क़ीमत ग़रीब मुसलमानों का हक़ है।

प्रश्न: हमारे यहां रवाज है कि अ़क़ीक़े का गोश्त पका कर लोगों की दावत करके खिलाते हैं, ऐसा करना कैसा है?

उत्तर: अ़क़ीक़े या कुर्बानी का गोश्त चाहे कच्चा तक्सीम करे, या पका कर तक्सीम करे या दावत कर के लोगों को खिलाए सब दुरुस्त है, लेकिन दावत को ज़रूरी क़रार दे कर अ़क़ीक़ा और कुर्बानी को मुशकिल न बनाना चाहिए।

प्रश्न: ओझड़ी खाने का क्या हुक्म है? बाज़ लोग उस का खाना मकरूह बताते हैं, सही क्या है?

उत्तर: हलाल जानवर जो ज़ब्ह किया गया हो उसकी ओझड़ी खाना दुरुस्त है, उसके खाने में कोई कराहत नहीं है।

प्रश्न: क्या मुरदार जानवर की चरबी, या हराम जानवर की चरबी नजिस है?

उत्तर: मुर्दार जानवर की चरबी नजिस है चाहे जानवर हलाल हो या हराम।

प्रश्न: बाज साबुनों में चरबी इस्तेमाल होती है और आमतौर से यह मुर्दार जानवर की चरबी होती है ऐसे साबुन के इस्तेमाल का क्या हुक्म है?

उत्तर: साबुन बनाने में अगर उसमें चरबी है तो उसकी असलियत बदल जाती है जिसको तब्दीले माहीयत कहते हैं इससे उस चरबी का हुक्म बदल जाएगा लिहाजा अगर मुर्दार की चरबी से साबुन बनाया गया हो तो साबुन पाक समझा जाएगा और उस का इस्तेमाल जाइज़ है।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

मानना और बहाने बनाना था, आपको आदेश हो रहा है कि आप उनसे मुंह मोड़ लें और उनको नसीहत कर दीजिए, अल्लाह दिलों के हाल से अवगत है और उस समय तक वे मुसलमान नहीं हो सकते जब तक वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी हर समस्या में फैसला करने वाला न बना लें और फिर फैसला हो जाने के बाद उसको दिल व जान से मान लें।

5. जो आदेश याकूब की संतान को हुआ, एक दूसरे को क़त्ल करने और वतन छोड़ने का, अगर इन मुनाफिक़ों से यह कह दिया जाए तो बगलें झांकने लगें तो उन्हें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए, और आसान आदेशों को मान लेने में जरा कोताही न करनी चाहिए, अगर अपनी दशा को सुधार लेंगे तो अल्लाह भी उन को सम्मानित करेगा, उनके कदमों को जमा देगा और उनको सीधी राह चला देगा।

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

इस्लाम में उदारता एवं पारस्परिक जीवन सुरक्षा

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

इस्लाम की संधि व्यवस्थाः-

इस्लाम दूसरी क़ौमों से इल्मी व सक़ाफ़ती तबादला और लेन देन का न सिर्फ़ हामी बल्कि दाई है, ताकि इन्सानी तअल्लुक़ात मुस्तहकम और रवाबित मज़बूत हों, ज़ेहन हक़ीक़ते हाल से क़रीब हो, महब्बत, मुवद्दत, एतिमाद, एतिराफ़ और अद्ल व इन्साफ़ के मफ़ाहीम लोगों को मालूम हों और अक़ीदा व ईमान के उसूल और इन्सानी इम्तियाज़ात (विशेषताओं) का भी इल्म हो जिन से इस्लामी तर्ज़ हयात मुमताज़ (विशेष) हों, और उसके ज़रीये अम्न व सलामती, राहत सुकून की राहें तमाम आलम के लिए हमवार होती हैं।

सांस्कृतिक प्रेरकों की वजह से आज इनसानी समाज के दरमियान दूरियां बढ़ती जा रही हैं, चुनांचि मौजूदा दुन्या हैरान व सरगरदाँ। इन्सान के लिए क़लबी व रूहानी सुकून फ़राहम करने से क़ासिर है, इसी तरह आलमी सतह पर हथियार बन्द हमलों, जिस से सुकून की फ़ज़ा परागन्दा हो रही है और सियासी व इक़तिसादी मुशकिलात में रोज़ अफ़ज़ूं इज़ाफ़ा हो रहा है, यह सारी चीज़ें दुन्या का सुकून गारत कर रही हैं और इस मआशरे की हिरमा नसीबी (दुर्भाग्य) और सल्बे हक़ (अधिकार हरण) के दरमियान जी रहे लोगों के अन्दर इन्तिकामी जज़बात (बदले की भावना) पैदा कर रही हैं, फिर वह बदला लेते हैं चाहे उसके लिए दहशत गर्दी की राह इख़तियार करनी पड़े, या बमों के धमाके करने पड़ें, जिस का लुक़म—ए—तर बेगुनाह और मासूम लोग बनें, ख़वाह उनका उन वाक़िआत से दूर दूर का तअल्लुक न हो।

मौजूदा दुन्या की तख़रीबी (ध्वंसात्मक) कोशिशें:-

आज फ़ौजी हमले सियासी तकब्बुर (राजनीतिक अभिमान) और क़ौमी शान की अलामत समझे जाते हैं, इस काम में खास तौर पर फ़ौजी जत्थे और वह बड़े देश आगे आगे हैं जो तमाम दुन्या की सर्वोच्य सत्ता अपने हाथ में लेना चाहते हैं और स्वंय को सुपर पावर की हैसियत से देखना चाहते हैं, इसकी वजह से वह अपनी सैनिक व्यवस्था मज़बूत करते हैं। विनाशकारी हथियारों और नाना प्रकार के एटम बम तैयार कराते हैं, हद यह है कि एक एक बम ज़मीन के एक बड़े भाग को और वहां के निवासियों का विनाश करने के लिए काफी है, भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति जीमी कारटर के बयानात (वक्तव्य) वर्ड न्यूज एजेंसियों ने इसराईल की जंगी तैयारियों और खतरनाक बामों के संबंध में ब्राड कास्ट किया है, जो सुनने योग्य है:—

"इसराईल के जंगी हथियारों में 150 एटम बम शामिल हैं" यह बात उन्होंने

उस सवाल के जवाब में कही जब उनसे पूछा गया कि ईरान के पास कितने एटमी हथियार हैं? इसी प्रकार ब्रिटिश और फ्रांस और उन जैसे बेशुमार देश हथियारों और बमों के मालिक हैं, अमरीकी भूतपूर्व राष्ट्रपति ने फ़िलिस्तीन के संबंध से इसराईल के सख़्त रवैये को निशाना बनाया जिसको उसने लंदन में आयोजित साहित्यिक प्रोग्राम में स्पष्ट किया और उसे वर्तमान दुन्या की बड़ी बड़ी ट्रेजडी बताई, इसी प्रकार उन्होंने वर्ष के प्रारम्भ में शर्क़े अवसत (मध्य पूर्व) का भ्रमण किया इस बीच वह हमास के लीडरों से मिले और यह यात्रा भी पश्चिमी शासकों की ओर से कठोर आलोचना के लिए थी।

विभिन्न न्यूज एजेंसियों ने अनुमान किया है कि इसराईल के पास सौ से दो सौ के बीच एटम बम मौजूद हैं। यह अनुमान सन्डे टाइम्स के अनुकूल एटमी कारखानों में काम करने वाले एक व्यक्ति ने लगाया है, मालूम होना चाहिए कि इसराईली प्रधान मंत्री यहूद ओलमोर्ट ने इसराईल को उन देशों में गिना है जो बड़ी एटमी क्षमता और योग्यता रखते हैं। यह बात दिसम्बर 2008 की है, इसराईली खुफ़या सेना के जनरल हारून ज़ेवी फ़रमारान ने राइटर की न्यूज एजेंसी के इन्टर व्यू में कहा "जीमी कार्टर ने जो कुछ बयान दिया है वह उनकी ज़िम्मेदारियों से तअल्लुक़ नहीं रखता और कहा "कुछ ऐसे वर्ग हैं जो इस बयान को विश्व प्रयासों के विरुद्ध प्रयोग कर सकते हैं जो ईरान को एटमी हथियार बनाने से रोक रहे हैं"।

भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति ने गरचे एक स्थायी शासन का समर्थन किया, फिर भी इसराईल की उन नीतियों का विरोध किया जिस का वह पालन कर रहा है, उन्होंने कहा "ज़मीन पर सबसे बड़ा गुनाह वह आर्थिक नाका बन्दी है जिसे उसने 17 लाख फ़िलिस्तीनियों के विरुद्ध किया है"।

मसल मशहूर है "हक़ीक़त छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से" चाहे उसे लाख मिटाया और झूट के पर्दे में छुपाया जाये। मानव जाति विशेष कर मुस्लिम दुन्या को समाप्त करने के लिए जो उसने साधन तैयार कर रखे हैं वह मीडिया से छुपे नहीं हैं, वर्तमान दुन्या में यूरीनियम की प्राप्ति और उसकी वृद्धि, फिर उसके द्वारा खतरनाक बम और विनाषकारी असलहे तैयार किये जा रहे हैं वह दुन्या के सामने है, दुन्या उस की डिटेल को बारीकी से जानती है।

अगर सवाल किया जाये क्या यह खतरनाक तैयारियां मानव जगत की बेहतरी और इन्सानी सलाहियतों क्षमताओं को बढ़ाने, ज़िन्दगी और समाज को बेहतर बनाने, एहसास ज़िम्मेदारी को जागृति करने के लिए की जा रही हैं? तो हमारे इस सवाल पर कोई तवज्जुह नहीं होगी और उसे ग़फ़लत व लापरवाई के खाने में डाल दिया जायेगा और इसका उचित जवाब नहीं मिलेगा, इसकी वजह यह है कि एटम बम बनाना,

भिन्न–भिन्न प्रकार के नये हथियार तैयार करना और काम है और एक उद्देश्य युक्त इन्सान का निर्माण और काम है।

तख़रीबे नशेमन आसां है,
तअ़मीरे नशेमन मुशकिल है।
तुम आग लगाना सीख गये,
तुम आग बुझाना क्या जानो''

घर का विनाश सरल है, और निर्माण कठिन है, इस वास्तविकता को समझने के बावजूद निर्माण का कोई आयोजन नहीं जो सदाचारी समाज का निर्माण करे। इसकी जगह नवीन से नवीन हथियार तैयार हो रहे हैं जो मानव जाति के नरसंहार के लिए हर समय तैयार रहते हैं।

इस्लाम संतुलन का दीनः-

इस्लाम, सन्तुलन और मध्यता का हामी है, वह युद्ध की हालत में भी संतुलन पर दृष्टि रखता है और इसकी शिक्षा देता है कि जब बहुत से गिरोह आपस में लड़ने पर आमादा हों तो साबित क़दमी से, कसरत से ज़िकरे खुदावन्दी करना, अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करना, निज़ा (वैमनस्य) से बचना, जो नाकामी का सबब है, फिर सब्र की तलक़ीन (उपदेश) कामयाबी की ज़मानतें हैं, अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः– ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुकाबला हो तो, तुम जमे रहो और अल्लाह को बहुत ज़ियादा याद करो, उम्मीद है कि तुम्हें सफलता प्राप्त होगी। और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानों और आपस में झगड़ो नहीं, नहीं तो तुम्हारे अन्दर कमज़ोरी पैदा हो जाएगी और तुम्हारी हवा उख़ड़ जाएगी, सब्र से काम लो, यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (अल–अनफ़ालः 45–46)

इस्लाम उन कुफ़्फ़ार को डराता है जो गुमान करते हैं कि मुसलमानों से आगे बढ़ जायेंगे, हक़ीकत तो यह है कि वह मुसलमानों को आजिज़ करने पर क़ादिर नहीं, अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को हुक्म देता है कि हस्बे मक़दरत ज़रूरी तैयारी कर लें, हथियारों और घोड़ों की शकल में, इससे महज़ दुशमनों और ऐसे लोगों के दिलों में रोब डालना मक़सूद है जिन को मुसलमान हनीं जानते, मगर अल्लाह उन्हें जानता है।

''सत्य का इन्कार करने वाले इस भ्रम में न हों कि वह बाज़ी ले गए। यक़ीनन ही वह हमें हरा नहीं सकते और तुम लोग, जहां तक तुम्हारा बस चले, ज़ियादा शक्ति और तैयार बंधे रहने वाले घोड़े उनके मुक़ाबले के लिए जुटाए रखो ताकि उसके द्वारा अल्लाह के और अपने दुश्मनों को भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते मगर अल्लाह जानता है।

(अल–अनफ़ालः 59–60)

लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े एटमी हथियार और बमों को तैयार करने का हुक्म नहीं दिया जो फट जाएं तो एक आलम का आलम तबाह कर डालें, क्या इन्सान, क्या जानवर, क्या माल व असबाब उसकी ज़द में आने वाली हर चीज़ ख़त्म हो जाये, इस्लाम इस

क़दर तैयारी का हुक्म देता है जिससे मुसलमान अपनी जान और अपने अक़ीदे व ईमान की हिफ़ाज़त कर सकें।

इस्लाम जाति पात की बुन्याद पर मानव जाति को ऊँच नींच के वर्गों में नहीं बांटता, आदमी की औलाद की हैसियत से सब को समानता देता है यदि कोई अच्छा और सम्मानीय है तो वह ईमान और नेक अमल की बुन्याद पर अच्छा है, बुरा और घटिया वही है जो ईमान और अमले नेक से वंचित है, अल्लाह तआला फ़रमाता है:—

"लोगो! हमने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी कौमें और बिरादरियां बना दीं ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुम में से ज़ियादा प्रतिष्ठित वह है जो तुम में सबसे ज़ियादा परहेज़गार है। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जानने वाला और ख़बर रखने वाला है। (अल हुजरातः 13)

❖❖❖

मसाजिद और हमारे.....

तो एलान की ज़िम्मेदारी किसी समझदार और ज़िम्मेदार शख्स को ही दी जानी चाहिए जो अच्छी ज़बान जानता और बोलता हो।

ऊपर मज़कूरा चंद निकात के अलावा और भी निकात हो सकते हैं उनकी निशानदेही करके उन्हें हल किया जा सकता है। मस्जिद के मक़ामी नमाज़ी, इन्तज़मिया कमेटी और दीगर मुख़लिस हज़रात की ज़रा सी तवज्जो, अदना सी कोशिश और मामूली सी मेहनत से नुमायां फर्क़ नजर आने लगेगा। इसमें रूपयों पैसों का कोई खास खर्च नहीं है। बस थोड़ी सी दिलचस्पी और मामूली सा वक़्त दरकार है। इस अमल से मस्जिद के करीब और अतराफ में रहने वाली आबादी, मस्जिद आने जाने वालों, और वहां से गुज़रने वाले लोगों पर एक अच्छा सा पाजिटिव इम्पैक्ट पड़ेगा और क़यामत के रोज़ इनशाअल्लाह इसका बड़ा अज्र भी मिलेगा।

◆◇◆

पवित्र कुर्आन की मौलिक.....

"बेशक अल्लाह तआला इस बात को न बखशेंगे कि उन के साथ किसी को शरीक करार दिया जाए और उस के सिवा और जितने गुनाह हैं जिस के लिए मंजूर होगा वह गुनाह बख्श देंगे और जो अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराता है वह बड़े जुर्म का मुर्तकिब हुआ।"

(अन—निसाः 48)

पवित्र कुर्आन में रब्ब (पालनहार) इलाह पूज्य की जो कल्पना दी वह तौहीद की कल्पना है, तौहीद का अर्थ यह है कि अल्लाह ही सब का पालनहार है और वही सब का पूज्य है और वह एक केवल एक है और वही अकेला इस संसार का निर्माता तथा स्वामी है और वह सब खुली और छुपी चीजों से अवगत है और हर वस्तु उसके अधिकार और उसके ज्ञान में है। पवित्र कुर्आन में आया है, अनुवादः—

"वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूज्य प्रभु नहीं, वह परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानता है। वह बड़ा कृपाशील अत्यन्त दयावान है।

◆◇◆

जारी.....

तेरी बरबादियों के मशवरे हैं आसमानों में

(मुसलमानों सावधान! तुम्हारे विनाश के परामर्श विश्व स्तर पर हो रहे हैं)

—मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी —हिन्दी लिपिः उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी

स्वास्थ्य अल्लाह तआला का बड़ा पुरस्कार है परन्तु मनुष्य सदैव स्वस्थ नहीं रह सकता, उसको रोग भी लगते रहते हैं, मनुष्य के शरीर में रोग दो मार्ग से आते हैं, कभी बाहर से रोगों का आक्रमण होता है तो कभी शरीर के अन्दर ही रोग बन जाते हैं, मनुष्य के शरीर के अन्दर का छुपा हुआ रोग कभी मनुष्य के लिए विनाशकारी सिद्ध होता है प्रायः बाहर से आने वाले रोग से बचना सरल होता है, बाहर से आने वाले रोग से बचने के लिए पूरा शरीर तैयार रहता है ऐसा कभी नहीं होता कि हाथ बाहर से आने वाले कीटाणुओं से बचें लेकिन पांव उसकी परवाह न करें।

जिस प्रकार लोगों को रोग लगते हैं उसी प्रकार क़ौमों को भी रोग लगते हैं। क़ौमों के यह रोग कभी बाहर से भी आते हैं और क़ौमों की अन्दरूनी कमज़ोरी से भी पैदा होते हैं, जब बाहर से कोई आक्रमण होता है तो क़ौम एक हो कर उसका मुक़ाबला करती है। प्रायः

फर्द क़ाइम रब्ते मिल्लत से है, तन्हा कुछ नहीं
मौज है दरया में और बेरूने दरया कुछ नहीं।

अर्थात मनुष्य का व्यक्तित्व क़ौम से सम्बन्धित है अगर क़ौम से उसको अलग कर दिया जाए तो उसका कोई मूल्य न रहेगा जिस प्रकार मौज (लहर) का सम्बन्ध समुद्र अथवा नदी से होता है, नदी या समुद्र से बाहर मौज की कल्पना भी नहीं।

समुद्र से पानी की जो बूंद अलग हो जाए उसमें कोई शक्ति नहीं रहती हवा उसको उड़ाती फिरती है, लेकिन वही बूंद समुद्र से मिली रहे तो अत्यन्त शक्तिशाली रहती है। इसी प्रकार जो लोग क़ौम के समूह से कट जाते हैं वह एक प्रकार से मिट जाते हैं उनकी कोई पहचान बाक़ी नहीं रहती।

क़ौम पर जब बाहर से आक्रमण होता है तो कुछ निर्लज्ज लोगों को छोड़ कर पूरी क़ौम एक हो कर बाहर के आक्रमण का मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाती है लेकिन जो विकार क़ौम के अन्दर पैदा हो जाता है वह क़ौम के अन्दर ही के लोगों से निकल पड़ता है उसको दूर करने की ओर क़ौम का ध्यान कम ही जाता है और उसको दूर करने के लिए क़ौम मुत्तहिद (एक जुट) नहीं हो पाती, इसके विषय में क़ौम में कोई चिन्ता भी नहीं पैदा होती, यह रोग किसी भी क़ौम के लिए बहुत ही घातक होता है, क़ौम का यह अन्दरूनी रोग क़ौम को अन्दर ही अन्दर खोखला

करता रहता है। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई किसी शाख पर बैठा हो और उसी शाख को काट भी रहा हो।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस वास्तविकता को यानी क़ौम की कमज़ोरी को इस तरह समझाया है, अनुवादः

"हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत सौबान से फरमाते हुए सुना, ऐ सौबान! उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब क़ौमें तुम पर इस तरह टूट पड़ेंगी जैसे तुम खाने के बर्तन पर खाना लेने के लिए टूट पड़ते हो। हज़रत सौबान ने अर्ज़ किया (पूछा) ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या यह हमारी तादाद के कम होने के सबब से होगा? आपने फरमया नहीं, उस वक्त तुम्हारी तादाद बहुत होगी लेकिन तुम्हारे अन्दर कायरता पैदा हो जाएगी, अर्थात तुम्हारे अन्दर दुन्या का प्रेम और लालच इस तरह आ जाएगा कि तुम दुश्मन से मुक़ाबले का साहस न कर सकोगे।"

(मुसनद अहमदः 8713)

इस वक़्त पूरे विश्व में तथा अपने देश के मुसलमान इसी परिस्थिति में हैं विश्व स्तर पर देखिए तो अमरीका, यूरोपियन यूनियन, रूस और चीन के बीच बहुत से मतभेद विद्यमान हैं, उनके बीच अपने अपने लाभ का खासा टकराव है, परन्तु यह मतभेद छुपा रहता है ज़ाहिर नहीं होता। कभी यह ज़ाहिर भी हो जाता है, लेकिन एक बिन्दु ऐसा है जिस पर सारा विश्व एक है और वह बिन्दु है इस्लाम का विरोध, मुसलमानों की इज़्ज़त व आबरू को बेक़ीमत करना। इस्लाम को बदनाम करना या इस्लाम पसन्द ताक़तों को खुद या निर्लज्ज मुस्लिम शासकों द्वारा कुचल डालना। अगर फिलिस्तीन, अफगानिस्तान और ईराक़ में अमरीका ने अत्याचार का बाज़ार गर्म कर रखा है तो शाम और ईराक़ में रूस और चीन खुली तलवार बने हुए हैं। इसी तरह अफरीक़ा के देशों में फ्रांस आदि इस एजेण्डे को पूरा कर रहे हैं। तात्यपर्य यह कि मक़तल (वधस्थल) बहुत से हैं और कातिल (हत्यारे) भी अलग–अलग हैं लेकिन हर वधस्थल, बेकुसूर मुसलमानों के सिरों से सजाया जाता है।

अब हिन्दुस्तान की परिस्थिति को देखिए राष्ट्रीय स्तर पर जो राजनीतिक एकता मौजूद है, उनके अतिरिक्त विभिन्न राजनीतिक पार्टियों की भूमिका भी प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, लेकिन मुसलमानों के विषय में उनमें कोई अधिक अन्तर नहीं है कुछ लोगों का द्वोष (बुग़्ज़) इतना बढ़ा हुआ है कि वह छुपाए नहीं छुपता और उनके मन की बात मुख से निकल ही पड़ती है, कुछ

लोग वह हैं जिनके दो मुखड़े हैं, जहां जिस मुखड़े की आवश्यकता होती है उसे सामने ले आते हैं, कभी मुसलमानों से इतनी सहानुभूति दिखाई जाती है कि जैसे उनसे बढ़ कर मुसलमानों का हितैषी और कोई नहीं, और कभी मुसलमानों के विरोध में खुल कर सामने आ जाते हैं, जो लोग अपने को सेकूलर कहते हैं वास्तव में वह राजनीतिक कपटाचार की मिसाल हैं। वह अपने आन्तरिक भावनाओं और वास्तविक संकल्पों को सुन्दर शब्दों, दिखावे की मुस्कुराहटों तथा सामयिक लाभ के लिए पहनने वाली राजनीतिक टोपियों और रूमालों में छुपाए हुए हैं लेकिन इस्लाम दुश्मनी और मुसलमानों से शत्रुता से शायद ही कोई गिरोह खाली हो, इस लिए इसमें कोई शंका नहीं कि जिस प्रकार भूखे लोग खाने की थाली पर टूट पड़ते हैं उसी तरह सम्प्रदायवादी तथा सामप्रदायक प्रेमी लोग और पार्टियां मुसलमानों पर टूट पड़ रही हैं। मुसलमानों की बुरी हालत का कारण वास्तव में यही दो बातें हैं जिनकी ओर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने संकेत किया है, एक दुन्या का बढ़ा हुआ लालच, धन तथा सांसारिक सामग्री का लालच, पदों की कामना, राजनीति में किसी स्थान की इच्छा आदि। दुसरे पस्त हिम्मती (साहसहीनता और कायरता) दूसरों की खुशामद (चाटुकारिता) अत्याचारों के सामने झुक जाना और उनसे मुक़ाबला करने से बचना। अभी एक मुस्लिम दुश्मन राजनीतिक नेता जो अपने घर पहुंच चुके हैं उन्होंने एक इंटरव्यू में स्पष्ट रूप से कहा कि हम मुसलमानों के वोटों को बांटना और हिन्दुओं के वोटों को एक करना चाहते हैं उन्होंने यह भी कहा कि साठ प्रतिशत मुसलमान हमारे साथ हैं इस लिए कि शिआ मुसलमानों और बरेलवी मुसलमानों का समर्थन हम को प्राप्त है और तीसरा नाम उन्होंने क़ादियानियों का लिया, और कहा वह भी हमारे साथ हैं, कादियानी तो मुसलमान नहीं हैं इसलिए उनके विषय में तो हमें कुछ कहना नहीं है। वह तो मुसलमानों के विरोध में हमेशा रहे ही हैं, मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी और उसके परिवार वाले 1857 ई0 में और उसके बाद भी वतन के लोगों के मुक़ाबले में अंग्रेज़ों को खुश करने में लगे रहे हैं और उनसे लाभ लेते रहे हैं लेकिन मुझे विश्वास है कि शिआ मुसलामनों और बरेलवी मुसलमान भाइयों के विषय में स्वामी जी भ्रांति का शिकार हो गये हैं या यह की वह जानबूझ कर ग़लत बोल रहे हैं, हो सकता है कि कुछ लोग दुश्मन के उपकरण बन कर उनके समर्थक बन जाएं लेकिन एक पूरे गिरोह के बारे में यह बयान वास्तविकता के विरुद्ध है और मुसलमानों में मतभेद पैदा करने का एक षड्यन्त्र है।

लेकिन उस समय कलेजा फटने लगता है जब मीडिया में यह बात दिखाई जाती है कि कुछ जुब्बा पोश टोपी पहने (विशेष इस्लामिक मौलवीयों का वस्त्र धारण किये हुए) और पगड़ी बांधे हुए सैकड़ों इंसानों के हत्यारे के द्वार पर पहुंच कर अपने समर्थन तथा सहयोग की दुहाई दे रहे हैं, इसी प्रकार कुछ निक़ाब पहने महिलाएं उस मानवता के दुश्मन के जुलूसों मे दिखाई जाती हैं। एक ऐसा व्यक्ति ज़िसने सत्ता पाने के लिए अनगिनत बेगुनाह और निहत्थे मुसलमानों का वध कराया, जिसने मुस्लिम स्त्रियों को बेआबरू कराया जिसके अत्याचारी काल में गर्भाशय में पलने वाले भ्रूण का भी वध किया गया, फिर उसको अपने अत्याचार पर न लज्जा आई न कभी भूले से भी पश्चाताप ज़ाहिर किया। क्या किसी मुसलमान के लिए यह बात उचित हो सकती है कि ऐसे अत्याचारी के सामने अपने को झुका दे और उसके अत्याचार को शुद्ध सिद्ध करने लगे।

उस का एक कारण दुन्या का प्रेम और उसका लालच है जो विभिन्न रूपों में प्रकट होता है, कभी इसलिए कि उसको व्यापार तथा उद्योग का लाइसेंस मिल जाए, तो कभी इसलिए कि उसको कोई सरकारी पद प्राप्त हो जाए, तो कभी इसलिए कि राजनीति में उसको उच्च स्थान मिल जाए तो कभी इसलिए कि उसे शैक्षणिक संस्थाओं, आर्थिक तथा लोकहित संस्थाओं के स्थापना की अनुमति मिल जाए, और कभी इसलिए कि उसके मुक़द्दमे (केस) की फाइल बन्द कर दी जाए, तात्पर्य यह कि दुन्या की चाह के अलग अलग रूप हो सकते हैं, लेकिन उन सब में जो चीज़ सम्मिलित है वह यह कि एक मुसलमान की दीनी ग़ैरत, मिल्ली हमीयत (क़ौमी गौरव) न्याय समर्थन, नैतिक मान्यताओं का सम्मान समाप्त हो जाए और दुन्या की चाहत की भावना उस पर छा जाए और अल्लाह तआला ने जो उसको स्वाभिमान प्रदान किया है उसको मौत की नींद सुला दे।

दूसरा कारण वही है कि मनुष्य अपने लाभ के लिए जानबूझ कर अत्याचार का विरोध छोड़ दे या साहसहीन हो कर खुशामद को अपना ले। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यही आदेश नहीं दिया कि इंसान केवल अपने को अत्याचार से बचाए अपितु मुसलमानों का यह कर्तव्य बताया कि वह अत्याचारी के अत्याचार को रोकें, और अत्याचारों का मुक़ाबला करें, मुक़ाबला केवल भौतिक हथियारों ही से नहीं होता अपितु हर उस शक्ति से होता है जिससे अत्याचारी के अत्याचार को रोका जा सके और अत्याचारों के हाथों को पकड़ा जा सके, अतः वह अपनी योग्यता के अनुरूप अत्याचारों का मुक़ाबला करे।

शेष पृष्ठ....40 पर

–देवरागरी लिपि में उर्दू

क़ुर्बानी के मसाइल

–हिन्दी लिपि राशिदा नूरी

1. जिस पर सद–कए–फित्र वाजिब है उस पर कुर्बानी भी वाजिब है, यानी जो 612 ग्राम चांदी रखता है या 612 ग्राम चांदी खरीदने के पैसे रखता हो उस पर कुर्बानी वाजिब है, वैसे जो शख़्स कुर्बानी करने की वुसअ़त रखता हो उसको भी कुर्बानी कर देना चाहिए चाहे साहिबे निसाब न हो।

2. मुसाफिर पर कुर्बानी वाजिब नहीं, मुसाफिर वह है जो मशहूर क़ौल के मुताबिक लगभग 78 किलो मीटर के सफर पर हो।

3. बक़रईद (जिलहिज्जा) की दस तारीख़ से लेकर 12 तारीख तक कुर्बानी दुरुस्त है लेकिन 10 तारीख़ को ज़ियादा सवाब है फिर ग्यारह को फिर 12 को।

4. बकरईद की नमाज़ से पहले कुर्बानी दुरुस्त नहीं नमाज़ के बाद कुर्बानी करना चाहिए।

5. 12 जिलहिज्ज को सूरज डूबने से पहले तक कुर्बानी दुरुस्त है सूरज डूबने के बाद कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

6. 10 जिलहिज्ज को बक़रईद की नमाज़ के बाद से 12 जिलहिज्ज को सूरज डूबने से पहले तक जब चाहें कुर्बानी करे अलबत्ता रात में कुर्बानी करना दुरूस्त तो है मगर बेहतर नहीं।

7. अगर कोई साहिबे निसाब कुर्बानी के दिनों में सफर पर था मगर वहां पन्द्रह दिन ठहरने का इरादा कर लिया तो उस पर कुर्बानी वाजिब है इसी तरह अगर वह 12 जिलहिज्ज को सूरज डूबने से पहले पहले अपने वतन (घर) आ गया तो उस पर भी कुर्बानी वाजिब है।

8. अपनी कुर्बानी का जानवर खुद ज़ब्ह करना बेहतर है दूसरे से भी ज़ब्ह करवाना दुरुस्त है और ये बात भी बेहतर है कि अपनी कुर्बानी को ज़ब्ह होते हुए अपनी आंखों से देखे।

9. कुर्बानी करते वक़्त ज़बान से नीयत करना या दुआएं पढ़ना ज़रूरी नहीं है दिल में कुर्बानी की नीयत कर के बिसमिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर ज़ब्ह कर दे कुर्बानी हो जाएगी।

10. नाबालिग़ चाहे साहिबे निसाब हो उस पर कुर्बानी वाजिब नहीं।

11. कुर्बानी सिर्फ इन जानवरों की दुरुस्त है बकरी, बकरा, भेंड़ (नर मादा) दुंबा, भैंस (नर मादा) ऊँट (नर मादा) गाय की कुर्बानी अगर चि दुरुस्त है मगर अपने मुल्क में क़ानूनन मना है इसलिए गाय की कुर्बानी न करना चाहिए।

12. भैंस (नर मादा), ऊँट (नर मादा) में सात आदमी तक शरीक हो कर कुर्बानी कर सकते हैं, सात आदमियों से कम लोग भी मिलकर इनकी कुर्बानी कर सकते हैं लेकिन क़ीमत अदा करने में किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो

अगर किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम होगा तो किसी की भी कुर्बानी न होगी।

13. कुर्बानी के लिए भेंड़, बकरी, दुंबे की उम्र पूरे एक साल होना चाहिए, भैंस (नर मादा) की उम्र पूरे दो साल होना चाहिए, ऊँट (नर मादा) की उम्र पूरे 5 साल होना चाहिए।

14. अगर जानवर की उम्र न मालूम हो तो देखना चाहिए की वह दांता है या नहीं अगर दांता है तो उसकी उम्र पूरी है, दांते को जानवर पालने वाले जानते हैं हर एक को इसका इल्म नहीं होता।

15. अंधे, काने और एक तिहाई से ज़ियादा कान कटे या एक तिहाई से ज़ियादा दुम कटे जानवर की कुर्बानी दुरुस्त नहीं

16. ऐसा लंगड़ा जो चौथा पांव ज़मीन पर रख ही नहीं पता उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं अलबत्ता अगर चौथा पांव ज़मीन पर रख कर चल लेता है तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त है।

17. जिस जानवर के बिल्कुल दांत न हों या दांत तो थे मगर आधे से ज़ियादा गिर गये उसकी भी कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

18. ख़स्सी यानी बधिया जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है इसी तरह अण्डू (जो बधिया न हो) की कुर्बानी भी दुरुस्त है।

19. कुर्बानी का गोश्त एक तिहाई ग़रीबों को देना चाहिए दो तिहाई में खुद खाये और अ़ज़ीज़ों को खिलाए लेकिन अगर घर में खाने वाले ज़ियादा हों और एक तिहाई ग़रीबों को न दे सके सब खुद घर वाले खा जाएं तब भी कोई गुनाह नहीं

20. कुर्बानी की खाल अपने काम में ला सकते हैं जैसे जा नमाज़ बना लें या झोले बना लें वग़ैरह लेकिन अगर खाल बेची गई तो उसकी क़ीमत ग़रीब मुसलमान का हक़ है उसको मस्जिद या मदरसे की तामीर या मुदर्रसीन की तन्ख्वाह में खर्च नहीं कर सकते।

21. जिस पर कुर्बानी वाजिब थी वह किसी वजह से कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी न कर सका तो अब वह एक बकरी या भेंड़ की कीमत खैरात करे अगर कोई बकरी वग़ैरह खरीद ली थी तो उसी बकरी को खैरात कर दे यह खैरात के पैसे सिर्फ ग़रीब मुसलामनों का हक़ है।

22. अगर किसी अपने वफात पाए हुए अज़ीज़ की तरफ से कुर्बानी करे तो यह दुरुस्त है और इस कुर्बानी का गोश्त वैसे ही खाये खिलाए जैसे अपनी कुर्बानी का गोश्त।

23. अगर किसी ने मरते वक्त वसीयत की कि मेरी तरफ से कुर्बानी कर देना फिर उसका इन्तिक़ाल हो गया अब अगर उसकी तरफ से कुर्बानी करेंगे तो यह पूरा गोश्त ग़रीब मुसलमान का हक़ है उसमें से खुद नहीं खा सकते।

24. अगर कोई शख्स कुर्बानी के दिनों में यहां नहीं है और उसके कहे बगैर उसकी तरफ से कुर्बानी कर दी तो उसकी वाजिब कुर्बानी अदा न होगी।

25. कुर्बानी का गोश्त ग़ैर मुस्लिमों को देना भी जाइज़ है।

26. आज कल बहुत से लोग सऊदिया या दुबई वगैरह मे रहते हैं यहां उनके घर वाले अपनी नासमझी से उनकी इजाज़त के बगैर बड़े जानवर में हिस्सा ले लेते हैं इसलिए अगर कोई बड़े जानवर में हिस्सा ले तो ये ज़रूर मालूम कर ले कि उस जानवर में कोई हिस्सा ऐसा तो नहीं है कि किसी की तरफ से उस हिस्से की कुर्बानी हो रही है उसकी इजाज़त नहीं ली गई है, यह मसअला बहुत ध्यान देने का है इसको नज़र अंदाज़ न करना चाहिए और यह मालूम कर लेना चाहिए कि अगर किसी बाहर वाले का हिस्सा है तो उसने हुक्म दिया है या नहीं।

नोटः- इन तमाम मसाइल की मालूमात दीन की मोतबर किताबों से ली गई हैं।

❖❖❖

तेरी बरबादियों के.....

लोकतांत्रिक देशों में वोट भी बड़ी शक्ति है, कि इसके द्वारा मनुष्य स्वयं सत्ता प्राप्त भी करता है और सत्ता दिलाता भी है एक मुसलमान के लिए कोई बात इससे अधिक अपमान की नहीं हो सकती कि वह रात के अंधेरे को दिन का उजाला कहने लगे।

मुसलमानों का कर्तव्य है कि, विश्व स्तर पर उनके विरोध में जो योजनाएं बनाई जा रही हैं और शायद यह ग़लत न हो कि हिन्दुस्तान भी इन योजनाओं का पार्टनर बनता जा रहा है वह इस परिस्थिति को समझें और किसी भी दशा में साम्प्रदायिक प्रेमियों तथा उग्रवादियों के सामने न झुकें इसलिए कि ऐसा करना देश के साथ विश्वासघात होगा तथा क़ौम व मिल्लत के साथ भी विश्वासघात होगा।

(तअ़मीरे हयात 10 जुलाई 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

शाकाहारी मांसाहारी

—इदारा

प्राकृतिक हैं शाका हारी
प्राकृतिक हैं मांसा हारी
गाय भैंस हैं शाका हारी
बाघ टाइगर मांसा हारी
शाका हारी मांसा हारी
दोनों का संयोग भी है
कुत्ते बिल्ली चिड़ियों में तो
मिलता यह संयोग भी है
मानव इसी श्रेणी में है
इस में भी संयोग है
मांसा हार और शाका हार
दोनों का संयोग है
आज भी संसार में
मांसाहारी हैं अक्सर
सर्वे करो तो पाओगे
शाकाहारी मुट्ठी भर
रही बात मुस्लिम की तो
वह है खाता फ़क़त हलाल
वैध वस्तु ही खाता है वह
मांस मिले या अरहरदाल

❖❖❖

अपव्यय की बुराई कुर्आन में

अनुवादः-

"बेशक फ़ुजूल खर्ची करने वाले अर्थात अपव्यय करने वाले शैतान के भाई हैं"

(बनी इस्राईलः 27)

काली मिर्च

—उबैदुल्लाह तालिबे इल्म, खुसूसी अव्वल

काली चिर्म एक बेलदार वनस्पति का फल है। जो काले रंग के छोटे छोटे झुर्रीदार हमारे सामने आते हैं। पके हुए फल हाथों से रगड़ने पर उसके ऊपर का छिलका अलग हो जाता है। इन पक्के बेछिलके के सूखे फलों को सफेद मिर्च कहते हैं। इसलिए कि छिलके अलग हो जाने के बाद यह सफेद दिखाई देते हैं। लेकिन हिन्दुस्तान में छिलके वाली काली मिर्च का प्रयोग सफेद मिर्च के मुक़ाबले बहुत अधिक है। इण्डोनेशिया में सफेद मिर्च बड़ी अधिक मात्रा में तैयार होती है।

प्राकृतिक स्वभाव तथा प्रयोग के अवसरः-

काली मिर्च या सफेद दानों का स्वभाव गर्म व शुष्क है। यह खाने को पचाती है, आमाशय की वायु को तोड़ती तथा बाहर निकालती है, बलगम (कफ) को बाहर निकालती है। पट्ठों को शक्ति प्रदान करती है। काली मिर्च को भूख की कमी, पाचन क्रिया की कमी, खांसी, पट्ठों की कमज़ोरी में प्रयोग करते हैं।

प्रयोग विधिः-

1. पाचन शक्ति के लिए एक ग्राम काली मिर्च का चूर्ण खाने के पश्चात पानी के साथ लें।

2. खांसी में इसका चूर्ण शहद में मिला कर चटाएं।

3. पट्ठों की कमज़ोरी में भी एक चम्मच शहद में काली मिर्च का चूर्ण मिला कर सुबह शाम चटाएं।

4. उफारा में एक ग्राम काली मिर्च का चूर्ण काला नमक मिला कर फांक कर गुनगुना पानी आधी प्याली पियें।

लाल मिर्चः- गर्म व शुष्क।

प्रयोग के अवसरः-

खाने को पचाती है, आमाशय की हवा को तोड़ती है और बाहर निकालती है, हृदय तथा नसों को गति देती है, हैजे की बीमारी में जब हृदय बैठने लगता है तो लाल मिर्च बड़ा काम करती है।

प्रयोग विधिः-

1. मेदे (आमाशय) की बीमारियों में लाल मिर्च दाल, सालन, सब्जी आदि में प्रयोग करना चाहिए परन्तु अधिक मिर्च न हो हल्की हो।

2. लाल मिर्च के चूर्ण में थोड़ा शहद मिलाकर आटे की तरह गूंध लें फिर उनसे छोटी छोटी गोलियां बना लें। हैज़े के मरीज़ को दो दो गोलियां दो घण्टे के अन्तर से खिलाएं। बड़ा लाभ होगा।

(चिकित्सा की विश्वस्सनीय पुस्तकोंसे ग्रहीत)

❖❖❖

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

एक बादशाह के चिड़िया घर में शेर भी था।

ایک بادشاہ کے چڑیا گھر میں شیر بھی تھا۔

शेर को पड़वे का गोश्त खिलाया जाता था।

شیر کو پڑوے کا گوشت کھلایا جاتا تھا۔

बादशाह ने एक रोज़ कहा कि हमारी हुकूमत में ज़बीहा ना होगा।

بادشاہ نے ایک روز کہا کہ ہماری حکومت میں ذبیحہ نہ ہوگا۔

शेर को शीरबिरंज और हल्वा खिलाओ।

شیر کو شیر برنج اور حلوا کھلاؤ۔

शेर ने ना शीरबिरंज खाई और ना हल्वा खाया।

شیر نے نہ شیر برنج کھائی اور نہ حلوا کھایا۔

चन्द रोज़ में शेर मरने के क़रीब हो गया।

چند روز میں شیر مرنے کے قریب ہوگیا۔

बादशाह ने हुक्म दिया कि ज़बीहा जारी किया जाय।

بادشاہ نے حکم دیا کہ ذبیحہ جاری کیا جائے۔

जो गोश्त खाता है वह गोश्त खाए।

جو گوشت کھاتا ہے وہ گوشت کھائے۔

शेर को पड़वे का गोश्त खिलाया जाए।

شیر کو پڑوے کا گوشت کھلایا جائے۔

इस तरह शेर की जान बची मगर पड़वे की जान गई।

اس طرح شیر کی جان بچی مگر پڑوے کی جان گئی۔